।। राजा को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ राजा को संवाद लिखंते ||

|| पद ||

|| संत सुखरामजी महाराज से सिवणी के राजा चंदूलाल बुजियो थे साध बाजो थारे भेष तो कोय नी || जब संत सुखराम जी महाराज बोलिया ||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज से,राजा चंदूलालने पूछा,कि,लोग आपको साधू कहते है, परंतु साधू का भेष तो,आपके शरीरपर कुछ भी नही दिखाई देता?तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहाँ ।

राजा अेसा भेष हमारा ||
भेदी जके भली बिध जाणे || क्रमी लखेन सारा ||
राम रटे प्रमेसर प्यारा || रेहे क्रमा सूं न्यारा ||टेर||

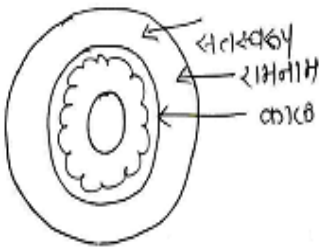

हे राजा,मेरे भेष को कोई केवली भेदी संत होगा वही सही तरह से समजेगा । जो कर्मी जीव है याने त्रिगुणी माया मे रचामचा जीव है वह मेरे भेष को नही जानेगा ।हे राजा,जो रामनाम का रटन करता वही परमेश्वर याने सतस्वरुप को प्यारा लगता और वही कर्मो से याने काल से मुक्त होता ।।टेर||

कफनी हमे क्षमा की पेरी || ग्यान गुदड़ी ओड़ी ||
चोळो अजब दया को गळ मे || कुबद कामनी छोड़ी ||१||

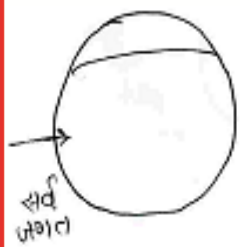

हे राजा,जैसे भेषधारी साधू गले मे कफनी पहनते है तो मैने क्षमा की कफनी पहनी है । भेषधारी साधू जैसे शरीर पे गोदडी ओढते है तो मैने काल के परे के सतस्वरुप ज्ञान की गोदडी ओढी है । भेषधारी साधू शरीर पर चोला रखते है तो मैने भी जीवो को काल के मुख से निकालने

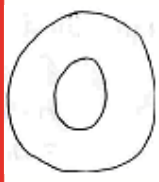

का दया का अजब याने कर्मीयो को समजने के परे का चोला धारण किया है । साधू लोग अपने विवाहीत स्त्री को भक्ती मे व्यत्यय लानेवाली माया समजके त्याग करते है तो मैने भक्ती मे व्यत्यय लानेवाली कुबुध्दी स्त्री को सदा के लिये त्याग दिया हुँ । ऐसा मैने अजब तरह का भेष धारण किया है ।||१||

रमता संग रमू जुग माही || इण मन कूं सिष कीनो ||
सत्त सब्द सो गरू हमारा || तत्त तिलक सिर दीनो ||२||

जैसे भेषधारी साधू धरती पे त्रिगुणीमाया के करणी क्रियावो मे रमण करते है ऐसेही मै भी पुरे जगत मे रमण करनेवाले रामजी के साथ घटको ही तीन लोक चौदह भवन बनाकर घट मे ही उसके साथ रमण कर रहा हुँ । जैसे भेषधारी साधू शिष्य बनाते है तो मैने भी मेरे मन को शिष्य बनाया हुँ । जैसे साधू के गुरु होते है वैसे ही मेरे गुरु है । मेरा गुरु सतशब्द है । जैसे जगत मे साधू मस्तक पे केसर,गंध का तिलक लगाते है वैसाही मैने

भी सतस्वरुप ब्रम्ह तत्त का तिलक लगाया है ।।।२।।

पोथी पाट बेद सब गीता ।। अणभेरा पट खोलूँ ।।
द्वादस मंत्र गायत्री मेरे ।। सत्त सब्द मुख बोलूँ ।।३।।

जगत के त्रिगुणी माया के साधू त्रिगुणी माया की पोथीयाँ,चार वेद,गीता,शास्त्र का परदा खोलते है तो मै अनभै देश के ज्ञान का परदा खोलता हुँ । माया के साधू गायत्री का द्वादस मंत्र समान मंत्र मुखसे जपते है तो मै राम नाम इस सतशब्द का मंत्र मुखसे जपता हुँ । ।।३।।

मुद्रा कंठी पावडी अलफी ।। भेद ग्यान की पेरी ।।
सास ऊसास अजपो घट मे ।। निर्गुण माळा फेरी ।।४।।

त्रिगुणी माया के साधू मुद्रा,कंठी,खडाउँ,अलफी ऐसी वस्तुये तनपे पहनते है जिसकारण वे साधू करके पहचाने जाते है तो मैने सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान तनपे पहना हुँ जिसकारण मै साधू पहचाने जाता हूँ । त्रिगुणीमाया के साधू जागृत अवस्था मे १०८ मणीयोंकी माला हाथ से फेरते है तो मै तन मे ३,५०,००,००० मणीयों की निरगुण माला साँस,उसास, अजपा मे २४ सो घंटा फेरता हुँ ।।।४।।

धीरज धरण लंगोटी जर्णा ।। आड बंध मत मेरी ।।
आ देहे बीण तांत सब नाड़ी ।। रागाँ अनहद गेरी ।।५।।

महिलावो पे नजर पडने पे मतमे कुबुध्दी आ सकती है इसलिये महिलाये तथा स्वयमके बीच मे आड्बंध रखते है और बैरागी मत बना रखते है परंतु मेरा मत ही आड्बंध है उसे पर स्त्री कुबुध्दी सुचती ही नही। साधू लोग बिणा रखते है तो मेरा देह यही मेरी बिणा है। साधू के बिणा को बजाने के लिये तार रहते है तो मेरे देह की सभी नाडीयाँ ये तार बनी है। साधू बिणा के तारो का उपयोग करके अलग-अलग राग-रागीनीयाँ अलापते है तो इन राग-रागीनीयो से अलग ऐसी अनहद शब्द की राग मेरी नाडी-नाडी गाती है ।।।५।।

गिगन मंडळ मे मढी हमारी ।। त्रुगुटी सेवा पूजा ।।
सत्त का सब्द जोत के आगे ।। ओर देव नही दूजा ।।६।।

साधू की जैसे पहाडी पे रहने की मढी रहती है वैसी मेरे देह के गिगन मंड्ल मे मेरी रहने की मढी है । साधूका सेवा पुजा का देवरा रहता है वैसा मेरा त्रिगुटी मे सेवा पुजा का देवरा है । साध के देवरा मे माया के अनेक देवतावो की मूर्तीयाँ रहती है तो मेरे देवरा में माया के परे का सतशब्द यह देवता है और मेरे देवरा मे प्रलय में जानेवाला कोई देवता नही है। साधू की सेवा पुजा की पहुँच जादा मे जादा ज्योती लोक तक पहुँचती है तो मेरी सतशब्द की भक्ती ज्योतीलोक के आगे दसवेद्वार पहुँचती है ।।।६।।

अळा पिंगळा करे आरती ।। अनहद झालर बाजे ।।
चित्त मन सुरत हजूरी चाकर ।। जिंग सब्द धुन गाजे ।।७।।

साधू की महिला भक्त आरती करते है तो मेरी गंगा,यमुना,सुषमना ये आरती करते है । साधू झालर बजाते है तो मेरे घट मे अनहद बजता है । साधूवो के हजुरी मे चाकर रहते है तो मेरे चित,मन,सुरत ये मेरे हजुरी मे चाकर बनके रहते है । साधू शंख फूँककर गर्जना करते है तो मेरे दसवेद्वार में जिंगशब्द के ध्वनी की गर्जना चल रही है ।।।७।।

दे रो भेष सकळ सो माया ।। असत सत नही कोई ।।
जे कोई भेष सब्द को साजे ।। मोख मिलेगा सोई ।।८।।

देह के उपर बनाया हुवा सभी भेष यह माया है । वह देह के साथ मिटनेवाला है। हंस को मोक्ष देनेवाला नही है इसलिये हंस के लिये सत नही है । असत है । भेष साजे बगेर मोक्ष नही है । भेष साजनेसे ही मोक्ष है परंतु जो साधू शब्दका भेष साजेगा वही मोक्ष मे जायेगा। वही काल के दु:खो से मुक्त होगा। आवागमन के चक्कर से छुटेगा ।।।८।।

के सुखराम भेष ओ मेरो ।। जे कोई संत बसावे ।।
तिनू ताप तोड़ कर हंसो ।। अमर लोक ने जावे ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज राजा को समजा रहे कि,हे राजा,जो संत मेरा भेष धारन करेगा वही संत आधी,व्याधी,उपाधी ये तीनो ताप को तोड्कर जहाँ आधी,व्याधी, उपाधी नही है ऐसे कोरे महासुख के अमरलोक में जायेगा ।।।९।।

राजा ऊवाच ।। दोहा ।।

तम भाखी घट भेद की ।। आ नही बेद के माय ।।
प्रगट लछण मोय कहो ।। अमर लोक जे जाय ।।१०।।

तब राजा बोला,कि,तुमने इस घट के,भेद की बाते बताई,ये बाते तो वेद मे नही है। तो अब इसके,प्रगट लक्षण मुझे बताईये,जिस योग से मेरा जीव अमर लोक में जा पहुँचेगा ।।।१०।।

बार बार बिणती करूँ ।। सांभळ ज्यो गुर देव ।।
प्रम धाम किम जावसी ।। जके बतावो भेव ।।११।।

मै बार-बार विनती करता हूँ वह सतगुरूजी महाराज,आप सुने । यह जीव परमधाम मे किस प्रकार से कैसे जायेगा इसका भेद मुझे बताईये । ।।११।।

श्री सुखो वाच पद ।।

राजा हे अेसा जन कोई ।। होण काळ इसर सूं आगे ।। ग्यान बतावे मोई ।टेर।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि,हे राजा,ऐसा कोई जन है क्या की जो होणकाल ईश्वर के आगे का ज्ञान मुझे बतायेगा । (ऐसा कोई है क्या?) ।। टेर ।।

जे कोई ग्यान त्याग ले धावे ।। तिके काळ मुख माई ।।
वाँ की संगत प्रम मोख नाही ।। हंसो किस बिध जाई ।।१।।

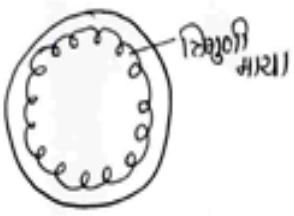

जो कोई संत त्रिगुणी माया को त्यागने का ज्ञान धारन करते है वे सभी संत कालके मुख में है । त्रिगुणी माया को त्यागा परंतु काल के

परे का ज्ञान धारन नही किया, काल के अंदर का ही ज्ञान धारन किया वे सभी साधू काल के मुख में ही है। उनकी संगती मे परममोक्ष नही है फिर ये जीव किस विधी से मोक्ष में जायेंगे ।।।१।।

जे कोई ग्यान बतावे करता ।। पेदा करंदा भाई ।।
ओ सब ग्यान काळ का मुख मे ।। न्याव करो ओ आई ।।२।।

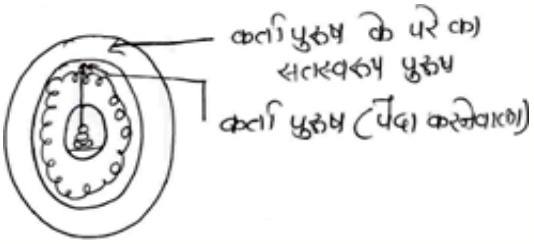

कितने ही ज्ञानी कर्ता के(श्रृष्टी कर्ता के),पैदा करनेवाले का ज्ञान बताते है । तो ये भी सभी ज्ञानी कालके मुखमें है कारण इसका निर्णय करो कि यह कर्ता पुरूष ही काल है ।।।२।।

किरीया कळा जप तप साझन ।। कूंची मुद्रा गावे ।।
पेलो छेह काळ का मुख मे ।। प्रम मोख नही जावे ।।३।।

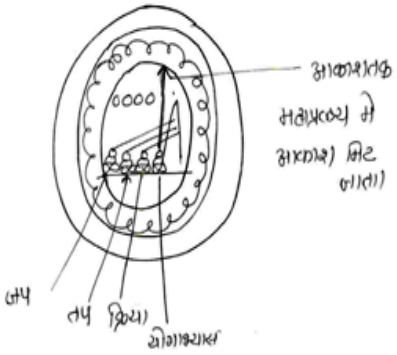

क्रिया करना,जप करना,तप करना,साधना करना,योगाभ्यास की किल्ली साधना और मुद्रा साधना ये सभी शुरू से अतंतक काल के मुँख मे है । इनसे परममोक्ष मे कोई भी नही जा सकता ।।।३।।

घणी बात थोड़ी मे केऊं ।। सुण लीज्यो नर नारी ।।
ब्रम्ह काळ माया सब चारो ।। देखो ग्यान बिचारी ।।४।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,बात तो बहुत है परंतु मै थोड़े में कहता हूँ । यह बात सभी स्त्री–पुरूषों सुन लो । ब्रम्ह ही काल है । तुम ज्ञान विचार करके देख लो कि यह ब्रम्ह ही मायाकी सभी रचना करता है और पुन: स्वयंही सभी खाकर अपने अंदर भर लेता है ।जैसे–खेती करनेवाला खेती करता है,बीज बोता है और उसकी निराई–गुड़ाई करके रखवाली करते हुये उसकी सुरक्षा करता है फिर बादमें आयी हुई फसल काटकर,रगड़कर खेतीवाला ही खाता है । वैसे ही,यह माया,ब्रम्ह की खेती है । तो यह ब्रम्ह माया की रचना करके यही ब्रम्ह पुन: खा जाता है मतलब यह ब्रम्ह ही माया का काल है ।।।४।।

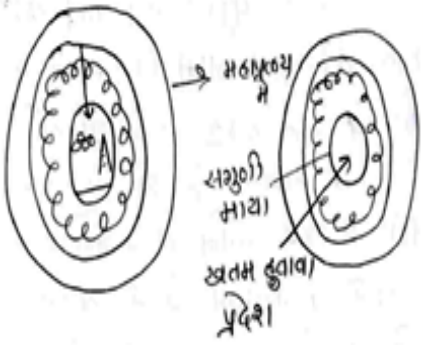

के सूखराम काळ सूं बारे ।। जे जन सत्त पद पावे ।।
हद कूं छाड़ तजे बेहद कूं ।। ब्रम्ह ऊलंघ हंस जावे ।।५।।

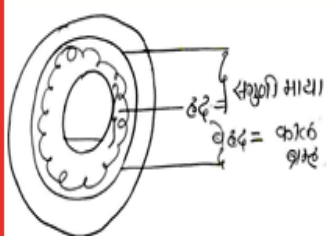

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिस किसी को सतपद की चाह हो तो वो उस कालसे याने ब्रम्हसे परे की साधना

करे यानी सतपद मिलेगा । इस विधी से हद को छोड़कर बेहद का त्याग करके काल ब्रम्ह का उलंघन करके सतपद में वे संत जायेंगे ।।।५।।

छंद ।। टोटक ।।

निज नाँव मुख मे नही भूप आवे ।। ग्यान गम सो जगत नाय पावे ।।
तत्त रूपी गुर की दिल मेहेर भाई ।। जिन नाँव जाग्या सिष तन माई ।।१।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज राजा को कहते है की,कालके परे ले जानेवाला निजनाम का मुँखसे उच्चारण नही होता। इस निजनामकी किसी भी ज्ञानी को जानकारी नही रहती। इसकी गती और जानकारी वेद,शास्त्र,पुराण आदि मायाके ज्ञान खोजकर जगतके ज्ञानी,ध्यानी,नर,नारी नही पा सकते। तत्तरूपी याने निजनाम तत्त जिस सतगुरुमें प्रगट हुवा है ऐसे सतगुरु के दिल की याने निजमनकी मेहर होने पर ही शिष्यके तनमे निजनाम जागृत होगा । ।।१।।

ज्याँ तत्त पाया सो जन क्राही ।। के सिष कूं कर आ असल माही ।।
तबे तत्त जाय मिले पेम होई ।। निज नाम के भूप तबे गम होई ।।२।।

जिस गुरूने तत्त याने निजनाम पाया वही संत कहलाते है और वे शिष्य से जो असली ध्यान तनके अंदर ही है वह शिष्य से करवाते तब तत्त याने निजनाम मिलता परंतु सतगुरू से प्रेम किए बिना तत्त याने निजनाम नही मिल सकता है । इस निजनामकी इस भेद से ही समज आती है ।।।२।।

पुरब देस उपासक मेटे ।। पिछम लेहे सोज तबे नाँव भेटे ।।
वांहाँ ड़ोर लागी नही तार तूटे ।। त्रिलोकी फंद सबे घट छूटे ।।३।।

पूरब देश की याने संखनाल के रास्ते की उपासना छोड़कर पश्चिम(बंकनाल)खोज लेगा तब निजनाम मिलेगा । फिर इस नाम से वहाँ ड़ोरी लग जायेगी ।(फिर वह लगा हुआ)तार टूटेगा नह। फिर वहाँ ध्यान लग जाने पर इस त्रिलोकी के सारे फंद इस घट अंदर निजनाम प्रगट हो जाने से छूट जायेंगे ।।।३।।

निज नाँव सूँ निज नाँव पावे ।। ज्यूं बीज सूं चीज सबे ऊग आवे ।।
जळ पेम चहिये सबे चीज ताँई ।। कण डाळ की बिध हे दोय माँई ।।४।।

निजनामसे यह निजनाम मिलता है(सतगुरूके पास निजनाम होगा तभी शिष्य को मिलेगा । गुरूके पास निजनाम नही रहा तो शिष्यको कहाँसे मिलेगा ।)जैसे बीजसे वह सभी चीजें उगकर आती है ।(जिस चीजों का जो बीज होगा उस बीजसे वही पेड़ उगेगा दूसरा होगा नही । ऐसे ही गुरूके पास यदी निजनाम रहेगा तो ही शिष्यमे निजनाम उगेगा । गुरूके पास निजनामके बिना और दूसरे नाम रहेंगे तो शिष्यमे जो गुरूके पास होगा वही शिष्य मे उगेगा । जैसे जिस पेड़का बीज होगा वही पेड़ उगता है वैसे ही ।)परंतु किसी भी बीजको पानी चाहिए ।(पानीके बिना कोई भी बीज नही उगेंगे ।)वैसे ही सभी भक्तीयाँ उगानेके

लिए प्रेम रूपी पानी चाहिए ।(पानीके बिना बीज उग नही सकता वैसे ही निजनाम प्रेमके बिना नही मिल सकता है ।)वृक्ष बीजसे और डालसे दो विधीसे होता है । ये दोनोंही विधी घटके अंदर ही है ।।।४।।

सबे नाव दीपग मुस्याल तारा ।। निज नाम सूरज मिण रूप धारा ।।
सबे नाँव जड़ि याँ सजीवण ताँई ।। निज नाँव चिंत्रावण यूं गुण माँई ।।५।।

दूसरे सभी नाम दीपक,मशाल,तारा जैसे है तो यह निजनाम सुर्य के जैसा है। दूसरे सभी ही नाम रोग निवारण करनेवाली जड़ी-बुटी के जैसे है तो निजनाम मुरदे को जिंदा करनेवाली संजीवणी बुटी जैसा है। दुसरे सभी नाम चिंतामणी छोड्के अन्य मणियोके समान है तो यह निजनाम चिंतामणी के जैसा है ।(चिंतामणी पास मे होने से जो मन मे चिंतन करोगे वही हो जायेगा। ऐसा इस चिंतामणी के जैसा)इस निजनाम का गुण है ।।५।।

केई काम करे मुख कयाँ से होवे ।। कोई काम ज्यूं दिष्ट भर नेण जोवे ।।
युँ नाँव निज नाँव की गत्त न्यारी ।। ज्यूं देव मानव की बिध न्यारी ।।६।।

कितने ही काम हाथोंसे तथा मुँखसे कहनेसे होते है और कितने ही काम दृष्टीसे याने आँखोसे देखनेसे हो जाते है। इसी तरह से नाम की और निजनाम की गती अलग-अलग है। जैसे देवोंकी और मनुष्योंकी विधी अलग-अलग है । ऐसे ही नामकी और निजनामकी विधी अलग-अलग है ।।।६।।

निज नाम की गम तबे हंस पावे ।। मुख नाभ पुर्ब तज पिछम दिस आवे ।।
कहो नाँव म्हेमा करे हे बड़ाई ।। तन मन माही मावे नही भाई ।।७।।

निजनामका पराक्रम तभी हंस को(जीवको)मालुम होगा ।(जब)मुँख व नाभी पुरबका (संखनाल का रास्ता)छोड़कर,पश्चिम दिशामे(बंकनालमे)आयेगा । तुम निजनामकी महिमा कहते हो और सभी जन निजनामकी बड़ाई करते है।(परंतु इसकी महिमा और बड़ाई किसीसे भी नही हो सकती है।)कारण यह निजनाम तन और मनके समज से परे है।।७।।

बिना जाप बिना चित्त अेसो ।। दिन रात अड़ियो सुण ग्रभ तेसो ।।
तन माही धुन्न व्हे रंरकार भारी ।। सबे बेण सुणे नाव डोर न्यारी ।।८।।

यह निजनाम जप किए बिना और चित्त लगाये बिना रात-दिन शरीरमे अड़ा हुआ(अटका हुआ)रहता है। जैसे गर्भ स्त्रीयोंके पेटमे अटका रहता है ।(वैसे ही यह निजनाम शरीरमे ही अटका हुआ रहता है।)इस शरीरमे ही ररंकार की बहुत भारी ध्वनी होती है ।(बाहरके दूसरों के बोले गये)सभी बेण(वचन)सुनता है परंतु नाम की डोर अलग ही लगी हुयी रहती है ।।।८।।

निज नाँव ने:छे गुरदेव होई ।। जे जन पूँता घर आद सोई ।।
दूजा सब गुर नांव रूपी से न्यारा ।। तत्त रूपी गुरदेव पार ब्रम्ह प्यारा ।।९।।

(ऐसा यह निजनाम कौन है कहोगे तो)यह निजनाम सतगुरू ही है । जो सतगुरू आदी घर

जाकर पहुँचे हुए है वही जन निजनाम है। दुजे सभी नामरुपी गुरु से ये निजनामी सतगुरू न्यारे है । ये तत्तरूपी गुरू सतस्वरुप पारब्रम्ह को प्यारे है ।।।९।।

राजो वाच ।।

क्हे भूप पूछे संत किणे रीत पाऊँ ।। ओ जुग सोज मे सरणे जाऊँ ।।
कहो अंग लक्षण काहा चेन क्रावे ।। तत्त रूप जन की क्यूँ प्रख आवे ।।१०।।

राजाने कहा कि,हे महाराज,ऐसे पहुँचे हुए संत मै किस रीती से पाऊँगा?(ऐसे संत को किस तरह से)खोजकर उनकी शरण मे मै जाऊँ?उस संत का स्वभाव क्या व उनके लक्षण क्या तथा उनके चिन्ह क्या है?उस निजनामी तत्तरूपी जन की परीक्षा मुझे कैसे करते आयेगी? ।।१०।।

सुखो वाच ।।

तत्त रूप जन की आ प्रख होई ।। सता समाधी लगे तत्त जोई ।।
नही तार तूटे दिन रेण सारी ।। रहे ध्यान त्रुगटी खँचे नेण भारी ।।११।।

तब सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा,कि,तत्त(ब्रम्ह)रूपी जनकी,यह पहचान है,कि, सत्ता समाधी लगी हुयी रहती है व ध्यान मे तत्त देखते है। उनका ध्यान रात दिन लगा रहता। उनके ध्यानका तार नही टूटता है। उनका हमेशा त्रिगुटीमे ध्यान लगा हुआ रहेगा और आँखे(सुरत)अन्दर मे,(त्रिगुटी में)खिंची जाती है।।११।। (ब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह)

दिल माहि दिल उलट दिल माय समावे ।। निज नाँव की डोर गेहे गेण जावे ।।
रहे अंग अेसो होय मुढ नर कोई ।। तबे बेण बोले व्हे तखत सोई ।।१२।।

दिल मे ही,दिल उलटकर,दिलमें समायेगा ।(दिल की बात उलटकर,दिलमे ही समा जाती है।)व निजनाम की ड़ोरी पकड़कर,उपर गगन मे जायेगा।(और बाहर से उनका)स्वभाव, जैसे कोई मुर्ख मनुष्य है,ऐसा मुर्ख जैसा दिखाई देगा और जब वे वचन बोलेंगे,तब सभी जन(चकित हो जायेंगे । ।। १२ ।।

तत रूपी जन की आ प्रख भाई ।। तन माँही मन व्हे ग्रकाब माई ।।
सिष सरण आया तत माँय जागे । सत पुरस की आ प्रख ओ अरथ लागे ।।१३।।

तत्त रूपी जन की यह पहचान है कि,उनके तन मे ही उनका मन,अंदर का अंदर ही गर्क हुआ रहता है। ऐसे सतपुरूषकी शरणमे कोई शिष्य आया तो(उस सतपुरूषमे जो ततसार वस्तु रहती है वही)ततसार वस्तु शिष्यमें जागृत हो जाती है। यही परिक्षा है और यही अर्थ तत्तरुपी गुरु का है ।।।१३।।

सत्त पुरस की प्रख आ सत्त भाई ।। बिना सिष क्रणी ल्हे धाम जाई ।।
हुवे आप जेसो निज नाँव पावे ।। तन माहि उलटर घर आद जावे ।।१४।।

और सतपुरूष की यह सच्ची पहचान है कि(जिस सतगुरू के योग से)शिष्य कुछ भी करणी नही करते हुए वह शिष्य परमधाम को प्राप्त करता है । जैसा गुरू है वैसा शिष्य हो जाता है यानी गुरूमें जो निजनाम है वह निजनाम शिष्यको प्राप्त होता है और वह

शिष्य इस पिंड़ में ही उलटकर बंकनाल के रास्ते से आदी घर सतस्वरुप ब्रम्ह में जाता है ।।।१४।।

सत्त पुर्स की आ प्रख भूप होई ।। सबे नाव न्यारा क्हे अर्थ जोई ।।
प्रब्रम्ह हे ब्रम्ह तीजीस माया ।। सत्त पुर्स सोई ओ भेद लाया ।।१५।।

हे राजा,सतपुरूष की यह परीक्षा है,कि,वे सभी नामों का,अलग-अलग अर्थ,देखकर कहते है। जैसे परब्रम्ह है व ब्रम्ह और तीसरी माया। इन तीनों का भेद बतायेंगे,उन्ही को सतपुरूष जानना चाहिए। ।।१५।। परब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह याने होणकाल

राजो वाच ।।

कहे भूप हो संत ओ न्याव कीजे ।। प्रब्रम्ह माया ब्रम्ह खोज दीजे ।।
ओ हम सुणियो ब्रम्ह अर माया ।। तीजो न सुणियो तम सोझ लाया ।।१६।।

तब राजा ने कहाँ कि,हे संत महाराज,मुझे इसका निर्णय बताईए,कि,परब्रम्ह कौन?माया कौन और ब्रम्ह कौन?इन तीनों का भेद और चिन्ह मुझे बताईये । मैने पहले ब्रम्ह और माया सिर्फ दो है ऐसा तो सुना था परंतु यह तीसरा परब्रम्ह आपने खोजकर लाया है यह तो मैने पहले कभी सुना नही था । परब्रम्ह=सतस्वरुप ब्रम्ह=होणकाल।।१६।।

सुखो वाच ।।

हे भूप प्रसंग कहुँ अेक तोई ।। प्रब्रम्ह माया यूं ब्रम्ह होई ।।
प्रब्रम्ह जळ रूप ब्रम्ह बीज हूवा ।। तर जम माया बिस्तार जूवा ।।१७।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि,हे राजा,(इसका मै तुम्हे),एक दृष्टांत कहता हूँ । परब्रम्ह,माया और ब्रम्ह ये अलग-अलग तीन है वो सुनो । परब्रम्ह यह पानी के जैसा है । ब्रम्ह यह बीज जैसा है । वृक्ष का विस्तार(जड़,तना,डाले,पत्ते,फूल,फल ये अलग-अलग होते है ।)यह माया का विस्तार है ।।।१७।।

हे बीज बन मे बन बीज माही ।। यूं ब्रम्ह माया प्रब्रम्ह नाही ।।
ब्रम्ह ब्रम्ह गाँया ब्रम्ह लग जावे ।। जे हंस उलटर फेर जूण आवे ।।१८।।

जैसे बीज वृक्षमे है और वृक्ष बीजमे है । वैसे ही मायामे ब्रम्ह और ब्रम्हमे माया है ।(ऐसे ये ब्रम्ह और माया है ।)परन्तु ये परब्रम्ह नही है । परब्रम्ह माया और ब्रम्ह से अलग है । ब्रम्ह-ब्रम्हका भजन करनेसे ब्रम्ह तक जाते है परंतु वे ब्रम्हमे गये हुए जीव पुन: उलटकर योनी में याने गर्भ में आते है ।।।१८।।

हे गोड डाळा फूल पात हूवा ।। यूँ देव अवतार सेंसार जूवा ।।
ज्यूँ बीज तरमे यूं ब्रम्ह होई ।। प्रब्रम्ह न्यारा जळ रूप जोई ।।१९।।

जैसे वृक्ष के तना,डाल,फूल,पत्ते आदि अलग-अलग होते है वैसे ही माया का विस्तार तना याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,ड़ाले याने अवतार और दूसरे संसार के लोग टहनीयाँ और पत्ते इस तरह से माया का अलग-अलग विस्तार है । जैसे बीज वृक्ष मे से ही निकलता है ऐसा ब्रम्ह है ।(वह वृक्ष के फूल रूपी संसार से जैसे वृक्ष के फूल मे से बीज निकलता है

वैसे ही)संसार मे से ब्रम्ह निकलता है । परन्तु परब्रम्ह पानी की तरह अलग ही है ।(जैसे पानी से वृक्ष उत्पत्ती एवं बाढ़ होती है वैसे ही परब्रम्ह से माया और ब्रम्ह उत्पन्न होता है ।)।।१९।।

सुण नाँव का भेद हे भूप न्यारा ।। प्रब्रम्ह आद दे कहुँ भेद सारा ।।
जिन प्रसंग सूं जो पुरस हूवा ।। सुण सूत बंधी यूं भेद जूवा ।।२०।।

वैसे ही,इन तीनो नामों का,भेद अलग है,तो राजा,तुम सुनो । वह आदी परब्रम्ह से,तुम्हे सभी भेद बताता हूँ । ।। २० ।।

प्रब्रम्ह सें सुण सत्त सब्द राई ।। जिंग सब्द निकस्यो ता सब्द माई ।।
जिंग सब्द सूं सुण अनाहद हूवा ।। अनाहद सूं सुण घूरे नाद जूवा ।।२१।।

परब्रम्ह से सत शब्द हुआ । उस सतशब्द मे से जिंग शब्द निकला और जिंग शब्द से अनहद हुआ और अनहद से नाद घोर अलग हुआ ।।।२१।।

उण नाद सूं सुण सकार आया ।। सकार ने सुण रंरकार जाया ।।
रंरकार सूं सुण दिल पुर्ष हूवा ।। दिल पूर्स सूं सुण चेतन जूवा ।।२२।।

और नाद से साकार हुआ । साकार मे से ररंकार निकला । ररंकार से दिल पुरूष हुआ,दिल पुरूष से चैतन्य अलग हुआ ।।।२२।।

चेतन सूं सुण घट ग्यान पाया ।। अर ग्यान सूं ध्यान बिग्यान आया ।।
बिग्यान सूं सुण समाद लागे ।। समाद सूं सुण पार ब्रम्ह सागे ।।२३।।

चैतन्य से,घटका ज्ञान मिला और ग्यानसे,ध्यान और विज्ञान हुए । व विज्ञान से समाधी लगी और समाधी से,परब्रम्ह वही का वही,हो गया । ।। २३ ।।

।। चोपाई ।।

हे राजा, ऊंडो ग्यान समज उर लीजे ।। अंध मुंध कोई काम न किजे ।।
सत्त सब्द की सोजी करिये ।। ऊला माँय उळझ नही रहीये ।।२४।।

हे राजा,यह ज्ञान बहुत गहरा है,(यह ज्ञान)समझकर हृदय मे धारण करो । अंध-मुंधमें याने बिना समझे हुए कोई काम मत करो । मैं जो कहता हूँ उस सतशब्द की तुम शोध करो । इधर के ही दूसरे शब्दो मे तुम उलझे मत रहो ।।।२४।।

हे राजा, आसा चाय कहो क्या माँई ।। ता काजे तें भक्त समाई ।।
में बूजुँ तुम कहो बिचारी ।। कोण धाम पें सुरत तुमारी ।।२५।।

हे राजा,तुम्हे आशा और चाहत किसकी है?तुम किसकी चाहत के लिए व कौनसी आशा के लिए,भक्ती कर रहे हो?उसका विचार करके,मुझसे कहो । और किस धाम के उपर,तुम्हारी सुरत लगी हुयी है,(वह मुझे बताओ?) ।। २५ ।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। बिस्न धाम पें सुर्त हमारी ।। ब्होत सुखाँ पर आसा धारी ।।
मुक्त काज हम भक्ति कराँ ।। ग्रभ काज हर हिर्दे धराँ ।।२६।।

(राजा बोला),हे स्वामीजी,विष्णूके धाम पर,मेरी सुरत लगी हुयी है,वहाँ(विष्णू के धाम मे), बहुत(तरह के)सुख है,उन सुखो पर,मैने आशा धारी(धारण की)है ।(व मेरे इस जीव की) मुक्ती होने के लिए,मै भक्ती करता हूँ । और पुन: गर्भ मे न आऊँ,इसलिए,मै हर का ध्यान , हृदय मे धरा(धरता)हूँ । ।। २६ ।।

सुखो वाच ।।

हे राजा, सुख की लार दु:ख सुण होई ।। ग्रभ मुक्त लग मिटे न कोई ।।
बिस्न धाम लग काळ ग्रासे ।। काम क्रोध दोनू रहे बासे ।।२७।।

(सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि),हे राजा,सुख के पीछे,दु:ख आते ही रहता है ।(जहाँ सुख है,वहाँ दु:ख भी आयेगा और गर्भ मे आना,मुक्ती पाने तक,(मुक्ती होने से, गर्भ मे आना)नही छूटता है। और विष्णूका धाम(वैकुण्ठ तक),विष्णूको और उसके धामको,काल खा जाता है ।(और विष्णू के धाम में),काम और क्रोध,ये दोनो रहते है।(जहाँ काम और क्रोध है,वहाँ सुख होगा नही । विष्णू के वैकुण्ठ मे,स्त्री–पुरूष,दोनो रहने से,वहाँ काम है । और जय–विजय(द्वारपालों)के उपर,सनकादिकों को क्रोध आया । वहाँ यदी क्रोध नही होता,तो सनकादिकों को क्रोध कहाँसे आता। तो वहाँ वैकुण्ठमे,काम और क्रोध,दोनो ही रहते है।)।२७।

हे राजा,ज्हाँ लग फोज काळ की जावे ।। तहाँ लग का सुख झूट क्रावे ।।
तीन लोक सुख बंछे कोई ।। ताँ लग सुखि कदे नही होई ।।२८।।

(काल यह,विष्णूको भी नही छोड़ता है,फिर विष्णूके भक्तोंको,कैसे छोड़ेगा?और काल से,कौन छुड़ायेगा?)जहाँ तक काल जाता है,वहाँ तकके,सभी सुख झूठे है। तीनो लोकोमे,जो सुख है,उन सुखों की,कोई इच्छा करता है,तब तक कोई,सुखी कभी भी नही होगा । ।।२८।।

हे राजा, चंद सुर पवन अर पाणी ।। धर ब्रहमंड लग करो पिछाणी ।।
तीनु देव ज्हां लग भै हे ।। ओऊँ पाँच काळ मुख जै हे ।।२९।।

हे राजा,चन्द्र,सुर्य,पवन और पानी तथा धरती और आकाश इनका विचार करके देख लो । इन सभी का नाश होगा। तीनो भी देव(ब्रम्हा,विष्णू,महादेव) इन्हें भी काल का भय है । ओअम् यह अक्षर तथा पाँच तत्व यह सभी,काल के मुख मे जायेंगे ।।।२९।।

हे राजा, सुर्गण नाम धाम सब सारा ।। अे हदका सुण हे बोहारा ।।
जे साहीब कूँ लखे नई कोई ।। ज्याँ मे अेई सूल सुण होई ।।३०।।

हे राजा,सगुण देवों के नाम और सगुण देवों के धाम,रहने का स्थान(चार धाम,सप्तपुरी, बारह ज्योतिर्लिंग और अड़सठ तीर्थ)ये सभी हद्द का ही व्यवहार है । जो कोई भी साहिब को नही पहचानता है उसको यह ऐसा ही दु:ख रहेगा ।।।३०।।

हे राजा,जक्त लेण अे धाम बणाया ।। सब औतार काज इण आया ।।

सब ही जीव हद मे राख्यां ।। तिण काजे अे सास्त्र भाक्या ।।३१।।

हे राजा,जगतको(संसारके मनुष्योंको)बंधनमें ड़ालनेके लिए ये धाम(चार धाम,सप्तपुरी, बारह ज्योतिर्लिंग,अड़सठ तीर्थ)बनाये है और ये सभी अवतार इसी कामके लिए(संसार को बंधनमे ड़ालनेके लिए सभी जीवोंको हद्दमे रखनेके लिए)आये थे ।(और संसारको) सभी ही जीवोंको भुलाकर हद्दीमें रखनेके लिए ये शास्त्र(वेद-पुराण आदी)कथन किए । ।।३१।।

हे राजा,इण काजे अे सास्तर कीया ।। ज्यूँ मिंदर के जुग बंदण दीया ।।
अेसे बेद च्यार कर भाई ।। तिन लोक बाँध्यो इण माई ।।३२।।

हे राजा,इस कामके लिए ये शास्त्र किये गये है और मंदिर आदी बनाकर संसार को बंधन मे ड़ाले। इसी तरह से ये चारो वेद बनाकर इन वेदो में तीनो लोकों को जकड़कर बांध दिए ।३२।

हे राजा,मूरख तके धंध ही जाणे ।। ग्यानी उळझ्या बेद बखाणे ।।
जे सुळज्या आगे हर चीनी ।। ज्याँ किण सुर्गुण सेवा कीनी ।।३३।।

हे राजा,अब इस संसारमें जो मुर्ख है वे धंधा करने(पेट भरना और पैसा कमा करके रखना)इतनाही जानते है। जो ज्ञानी है वे(ज्ञानमे)उलझकर वेदके ज्ञानकी बखाण करते है। जो इनके जालसे सुलझकर(छूटकर)और इनके ये सारे बंधन और लगाए हुए फांसे तोड़ कर बाहर निकल गये है वे हर(रामजी को)पहचाने है। हे राजा,पहले के हो गये ऐसे किस संत ने सगुण देव की सेवा की है ? ।।३३।।

हे राजा, ब्रम्हा बिसन महेसर देवा ।। वे सो करे कोण की सेवा ।।
वो तत्त ग्यान बिचारो राई ।। कोण सब्द आ माँड उपाई ।।३४।।

हे राजा,(ये सगुण देव,जिसकी तुम सेवा करते हो वे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव इन्हें तुम देव कहते हो परंतु)ब्रम्हा,विष्णू ,महादेव ये किस देवकी सेवा करते है?हे राजा,(ब्रम्हा,विष्णू , महादेव जिस देव की सेवा करते है)उस तत्त ज्ञान का,तुम विचार करो । हे राजा,किस शब्द से श्रृष्टि उत्पन्न किया उसका विचार करो ।।।३४।।

हे राजा,सुण समज बिचारी ।। आगे रिषाँ कोण मत धारी ।।
ज्यांरा सिष औतार कुवाया ।। कोण ग्यान वे हिर्दे लाया ।।३५।।

हे राजा,तुम सुनो और समझकर विचार करो,कि,पहले के ऋषी(वशिष्ठ व दुर्वासा) हुए, उन्होने कौनसा मत धारण किया,कि,उन ऋषीयोंके(वशिष्ठ व दुर्वासाके)शिष्य,अवतार कहलाये।(वशिष्ठका रामचन्द्र,दुर्वासाका कृष्ण,जिनकी तुम भक्ती करते हो,वे उस वशिष्ठ व दुर्वासाके शिष्य बने।)तो उन ऋषीयोंने,कौनसा ज्ञान हृदय में लाया?।।३५।।

यूं तो ब्रम्ह सकळ सब कोई ।। पण देहे धारी सुं माया होई ।।
ज्यूं जळ सुं चीज उपज सब जावे ।सुण जळ को रूप किसी बिध कुवावे ।।३६।।

(राजा बोला,कि,राम और कृष्ण ये तो खुद ब्रम्ह ही थे और राम तथा कृष्ण ये कुछ, अलग-अलग नही थे। तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,कि)ऐसे तो ये सभी जीव आदि मे ब्रम्ह ही है(ब्रम्ह से उत्पन्न हुए सभी जीव ब्रम्ह ही है।)परंतु जीव के पाँच तत्व की देह धारण करने से वह जीव माया मे आकर माया हो गया इसी तरह से ये अवतार देह धारण करके माया हो गये। ऐसे ब्रम्ह से उपजे हुए अवतार जीव ब्रम्ह का काम नही कर सकते है।) जैसे जल से उपजी हुयी चीजे पानी का काम नही कर सकती। इसी तरह से(ये ब्रम्हसे आये हुए अवतार ब्रम्हका काम नही कर सकते।)(ये जीव ब्रम्हसे आये इसलिए ब्रम्ह है।)जीवने देह धारण किया(इसलिए वे माया की संगतीसे)माया हो गये। जैसे पानीसे उत्पन्न हुयी चीज है उसमें पानी का रूप कौनसा है?वह मुझे बताओ? ।।३६।।

हे राजा, नाना बिध की चीजां सारी ।। छोटी मोटी हळकी भारी ।।
अेतो सब ही जळसें होई ।। जळको रूप किसो कहो मोई ।।३७।।

हे राजा,नाना प्रकार की चीजें,जो दिखाई देती है,वे सभी छोटी-बड़ी,हल्की-भारी,ये सब पानीसे(उत्पन्न)हुयी है।(परन्तु पानीसे उत्पन्न हुयी चीजोंमे,पानी नही है।)(यानी ये मेरे पहने हुए कपड़े,मेरी देह,बिछाई हुयी गद्दी और यह पृथ्वी,मिट्टी,पेड़,पहाड़ वगैरे ये सभी, पानी से ही उत्पन्न हुए है,परन्तु यदी मुझे प्यास लगी,तो ये पानी से उत्पन्न हुयी चीजें, पानी का काम,कुछ भी नही दे सकती है।)इसी तरह ब्रम्ह से उत्पन्न हुए,ये देव और अवतार ये भी,ब्रम्ह का काम नही दे सकते है । ।। ३७ ।।

हे राजा, जळ की चीज सकळ सोई कवावे ।। किण ही सूं सुण प्यास न जावे ।।
यूं सुण मोख ब्रम्ह बिन नाही ।। ही राजा ज्याँ सूं सुण समझो माही ।।३८।।

हे राजा,ये पानी से पैदा हुयी सभी चीजें,पानी का काम नही दे सकती। किसी भी(पानी से पैदा हुयी)चीजों से,प्यास नही जायेगी। इसी तरहसे मोक्ष,ब्रम्हके अलावा,दूसरे ब्रम्हसे उत्पन्न हुए,अवतार आदी देवोसे,मोक्ष नही मिलेगा। इसलिए,हे राजा,तुम(यह)सुनकर,अपने अन्दर समझो । ।। ३८ ।।

हे राजा,ब्रम्ह ध्यान मेई फेर क्रावे ।। बिना भेद सुण मोख न जावे ।।
ज्यूं जळ सूं सुण न्हावे धावे ।। पीवन बिध बिन प्यास न खोवे ।।३९।।

हे राजा,इस ब्रम्ह का ध्यान करनेमे भी,बहुत फरक है। इस ब्रम्ह के ध्यान के भेद बिना,कोई भी,मोक्ष मे नही जा सकता है।(जैसे पानी से प्यास जाती है,परन्तु पानी पीने का भेद मालुम रहा,तो प्यास जाने के लिए,एक लोटा भी पानी नही लगेगा। परन्तु पानी पीने का भेद मालुम नही रहा,तो बड़ी नदी,तलाब रहे और उसमे जाकर बैठ गये और उपर-उपर)नहाना-धोना किया,तो भी पानी पीने की विधि के बिना,प्यास नही जायेगी। इसी तरह से,ब्रम्ह ध्यान की विधी,मालुम हुए बिना,मोक्ष मे,कोई जा नही सकता। ।।३९।।

हे राजा,जळ की चीज जळ किसूं धोवे ।। तब निर्मळ होय उजळी होवे ।।

जळ बिन खसे ब्होत बिध कोई ।। चिज बीज से निर्मळ नही होई ।।४०।।

हे राजा,जल से उत्पन्न हुयी चीज,मैली हो गयी,तो वह चीज,जब पानीसे ही धोवोगे,तभी निर्मल होकर,उजली होगी। पानीके बिना,अनेक तरहसे कष्ट करके,मेहनत किया,तो भी (वह)चीज,(पानीके बिना),चीजसे(धोनेसे),निर्मल नही होगी।(इसी प्रकार स्वयं अवतार और देव भी,ब्रम्ह के बिना,अपने मत से,अपने बलसे,मोक्ष मे नही जा सकते है।)।।४०।।

हे राजा ।। भारी चीज तके जुग माही ।। तैसे सब औतार कवाही ।।
हळकी बस्त सब जग ठाणो ।। अेसे जुग संसार बखाणो ।।४१।।

हे राजा,जैसे जगत मे भारी चीजे है,वैसे ही ये अवतार है। और हल्की चीजे वस्तुएँ जैसे है,वैसे ये जगत और संसार के लोग समझो। ।। ४१ ।।

हे राजा,भारी चीज संग जे जावे ।। तो हळकी संग सोभा नही पावे ।।
पण जळ को रूप हुवे नही भाई ।। लाख चिज भाऱ्याँ संग जाई ।।४२।।

हे राजा,वैसे ही भारी मनुष्य के साथ हम गये,तो(उसी भारी मनुष्य की ही,शोभा होगी।) हमारा कोई नाम भी नही लेगा।(वैसे ही,भारी देव अवतार आदी के संग हम गये,तो हमारी शोभा नही होगी,परन्तु दूसरी(जलसे पैदा हुयी)चींजे,जलसे(पानीसे पैदा हुयी),बड़ी चीजो के संग मे गयी,तो भी जलसे बनी चीजों का,पुन: पानी नही बनेगा। यदी जलकी(पानीसे उत्पन्न हुयी)चीज,अपनी अपेक्षा,लाखों(गुण)भारी चीजों के संग मे गयी,तो भी पानी का रूप नही होगीं । ।।४२।।

हे राजा,छोटी बड़ी चीज सो भाई ।। जळ पीयां बिन बधेन काई ।।
क्हा औतार मिनख नर लोई ।। ब्रम्ह ध्यान बिन मुक्त न होई ।।४३।।

हे राजा,इस संसार मे छोटी-बड़ी सभी चीजें है। वो सभी चीजे,पानी पीये बिना,कोई भी नही बढ़ती है। तो अवतार क्या और मनुष्य क्या और सभी लोग क्या,सभी लोग ब्रम्ह के ध्यान के बिना,कोई किसी की भी,मुक्ती नही होगी । ।।४३।।

हे राजा,ब्रम्ह ध्यान बिन ध्रम कवावे ।। सो तो सब माया कूं ध्यावे ।।
ज्यारां ग्रभ न छूटे कोई ।। वे उलटा माया बस होई ।।४४।।

हे राजा,ब्रम्ह ध्यान के बिना,जो दूसरे सभी धर्म है,वे सभी धर्म माया के है और दूसरे सभी धर्म,माया की भक्ती करनेवाले है। माया की भक्ती करने वालो का,गर्भ में आना तो छूटेगा ही नही,उलट वे(माया की भक्ती करनेवाले),माया के फंदे में पड़ेंगे । ।। ४४ ।।

राजा वाच ।।

हो स्वामीजी ।। पांडु तके ध्रम पुन्न कीया ।। ब्होत दान बिप्राँ ने दीया ।।
ऋक्माँगद अमरिष कवाया ।। वेही ध्रम सर्गुण ने ध्याया ।।४५।।

राजा बोला,कि,हे स्वामीजी,पूर्व कालमें पाण्ड़व हुए थे,उन्होने बहुत धर्म किया और पुण्य किया तथा ब्राम्हणों को बहुत दान दिया और रूखमांगद और अंबरीष ये राजे हुए,इनका

भी धर्म, सगुण उपासना का ही था । || ४५ ||

श्री सुखो वाच ||

हे राजा, रूक्मा दिक अमरीषज होई || वे भी मोख न पूँता कोई ||
पाँडु किस्न फेर याँ आसी || सुख दु:ख फेर जक्त संग पासी ||४६||

सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा,कि,हे राजा,रूखमादिक व अंबरीष आदी राजे,जो पहले हो गये,वे कोई भी मोक्ष में नही पहुँचे। पाण्ड्व और कृष्ण ये पुन:,यहाँ(जगत मे) जन्म लेकर आयेंगे और ये(जगतमे आकर,जगतके)सुख व दु:ख,जगत के साथ भोगेंगे। ||४६||

हे राजा, सुर्गण नाम धाम सब सेवा || समज्याँ बिना भजे सब देवा ||
जे सुण समज सुळजीया आई || ज्यां किण सर्गुण सिंवऱ्यो जाई ||४७||

हे राजा,सगुण देवोंके नाम व धाम(देवोके रहने लोक),इन सभी की सेवा,जो बिना समझे हुए मनुष्य है,वे सभी सगुण देवोकी भजन करते है। जो समझकर इनके जालों से, सुलझकर निकल गये,ऐसे किसी भी सन्तो ने,सगुण देवों का या अवतारों का,स्मरण किया है क्या? वह विचार कर देखो । || ४७ ||

हे राजा, सुण बचन हमारा || कोण मत का ग्यान तमारा ||
कोण सब्द ले सिंव्रण करो || कोण देव सिर पूजा धरो ||४८||

हे राजा,मेरे वचन सुनो। तुम्हारा मत कौनसा है और तुम्हारा ज्ञान क्या है?तुम किस शब्द का स्मरण करते हो,(सुमिरन करते हो।)तुम किस देवको,शिरपर धारण किए हो?)।४८।

राजो वाच ||

हो स्वामीजी दया पुन्न ओ मत हमारे || सर्गुण ग्यान हिर्दे हम धारे ||
क्रिस्न क्रिस्न ओ सिंव्रण कराँ || क्रिस्न देव सिर पूजा धराँ ||४९||

राजा ने कहा,हे स्वामीजी,दया रखना और पुण्य करना,ये मेरे मत है। सगुण भक्तीका ज्ञान,मैने हृदयमे धारण किया है। और कृष्ण-कृष्ण(कली संतार्णोपनिषद इस मंत्रका),मै सुमिरन करता हूँ। कृष्णदेव की पूजा,मैने शिरोधार्य की है।(शिरपर धारण की है।)।।४९।।

सुखो वाच ||

हे राजा,दया पुन्न सुक्रत सुण होई || सुख दु:ख लारे रहे दोई ||
सुर्गुण ग्यान हद लग जावे || बेहद की गम कदे न पावे ||५०||

सतगुरू सुखरामजी महाराजने कहा,हे राजा,दया रखना और पुण्य करना,ये सुकृत के काम है। इस पुण्य करने से,सुख और दु:ख ये दोनो,पीछे लगे ही रहते है ।(पुण्य करने से,सुख-दु:ख नही छूटते है।)सगुण ज्ञान हद्द तक जाता है ।(हद्द से आगे नही जाता है । इस सगुण ज्ञान से),बेहद्द की जानकारी,तुम्हें कभी भी नही मिलेगी । || ५० ||

राजो वाच ||

हो स्वामीजी || सर्गुण निर्गुण नही अे दोई || हद बेहद को कैसे होई ||

हम तो सबे अेका कर जाणी ।। क्रिस्न ब्रम्ह मे दुज न ठाणी ।।५१।।

हे स्वामीजी,सगुण और निर्गुण ये कोई,दो अलग-अलग नही है । हद्द और बेहद्द ये कैसे है,मुझे बताईये?मै तो सभी(सगुण और निर्गुण)हद्द तथा बेहद्द यह सभी,एक ही करके जानता हूँ । कृष्ण मे और ब्रम्ह के बीच मै,कोई दूसरा भेद नही जानता ।। ५१ ।।

सुखो वाच ।।

हे राजा,ब्रम्ह अरूप रूप सो माया ।। बोलण हार अेक किम क्राया ।।
तीन लोक हद जंवरो खावे ।। बेहद ज्हाँ काळ नही जावे ।।५२।।

(ब्रम्ह और कृष्ण एकही जानता हूँ),सतगुरू सुखरामजी महाराज ने कहा,कि,हे राजा,ब्रम्ह है,वह तो अरूपी है।(उसे रूप नही है।)रूप जो दिखाई देता है,वह सभी माया है। बोलनेवाला व अरूपी ये,एक कैसे होगे। तीन लोकों तक हद्द है,वहाँ तक यम,सभी को खा जाता है। मै कहता हूँ ,कि,उस बेहद्द तक,काल जा नही सकता है । ।। ५२ ।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। वेही बिस्न वे क्रिस्न क्रावे ।। वेही हद बेहद जावे ।।
सब अवतार तिथंगर होई ।। क्रिस्न देव बिन अवरन कोई ।।५३।।

राजा ने कहाँ,कि,हे स्वामीजी,वही विष्णू भी है और वही कृष्ण भी है। वही ही हद्द है और बेहद्दमे भी वही जाता है। ये सभी अवतार और सभी तिर्थकर यह सभी,कृष्ण देव के अलावा,दूसरे कोई भी नही है।(ये सभी और कृष्ण एक ही है और दूसरे कोई नही है ।) ।।५३।।

श्री सुखो वाच ।।

हे राजा,देहे का नाम तके सब माया ।। उपजे खपे जक्त मे काया ।।
सुर्गुण देव बेहद किम जावे ।। सो राजा जम हात बिकावे ।।५४।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,कि,हे राजा,जिसने भी देह धारण किया और उस देह का नाम रखा गया,वे सभी देह व देह के नाम,सब माया है । उनकी देह(शरीर)जगत मे ही उपजती है और जगत मे ही,उसका नाश भी होता है । तो माया नाम और सगुण देव,बेहद्द मे कैसे जायेंगे?ये जो सगुण देव है,वे सभी यमके हाथोंमे बेचे गये है ।(जैसे जानवर,कसाईके हाथोमे बेचे जाते है,वैसे ही ये देव भी,यम के हाथों मे बिके हुए,देवो को यम,कभी ना कभी तो मारेगा ही ।) ।।५४।।

हे राजा,ओऊँ सब्द मुळ हे माया ।। ताँ की बणी सकळ अे काया ।।
उपजे खपे सो माया जाणो ।। इखर सब्द सो कर्ता ठाणो ।।५५।।

हे राजा,यह जो ओअम् शब्द है वही ओअम शब्द तो माया का मूल ही है । (माया की उत्पत्ती ओअम् शब्दसे हुयी है इसलिए यह ओअम मायाका मूल ही है ।)उस मायासे सभी(देवोंकी और अपनी)काया बनी हुयी है । जो संसारमे उपजती है और खपती है(नष्ट होती है)वे सभी माया ही है । जो ईखर शब्द है,जो क भी नाश नही होता वह सभी का

कर्ता है ।।।५५।। ईखर शब्द = सतशब्द

हे राजा,ध्र ध्र देहे औतार कवावे ।। से तो सकळ विष्णु सूं आवे ।।
याँ रे परे निरंजन देवा ।। ताँ की करे सकळ अे सेवा ।।५६।।

हे राजा,जो देह धर-धरकर(धारण कर-करके)अवतार कहलाये हुए वे सभी अवतार विष्णू से आये हुए है। उससे(विष्णूसे)परे निरंजन देव है। उस निरंजन देव की ये सभी (अवतार और विष्णू)सेवा करते है ।।।५६।।

हे राजा,माया ब्रम्ह दोय हे राई ।। अेक किसी बिध कयाँ जाई ।।
माया सुख दु:ख भुक्ते दोई ।। ब्रम्ह सदा सुण ने: चळ होई ।।५७।।

हे राजा,माया और ब्रम्ह ये अलग-अलग दो है। माया और ब्रम्ह इन दोनोको,तुम एक किस तरहसे कर रहे हो?माया तो सुख व दु:ख दोनो भोगती है। यह ब्रम्ह तो सदा (नित्य,जिसका त्रिकालमे अभाव नही),ऐसा निश्चल है । उसे कोई सुख-दु:ख नही होता है । ।।५७।।

राजा वाच ।।

हे स्वामीजी, राम क्रिस्न तो अवगत होई ।। माया सरूप नही अे दोई ।।
याँने सो माया ठेरावे ।। सो सब ही भूला जावे ।।५८।।

राजा ने कहा,कि,हे स्वामीजी,राम व कृष्ण,ये तो अविगत है। राम और कृष्ण ये कोई, माया के रूप नही है। इन दोनो को(राम व कृष्णको),कोई माया समझता है,तो वे सभी भूल करते है । ।।५८।।

सुखो वाच ।।

हे राजा,दुर्वासा रिख क्हो क्हा कीया ।। कोण सब्द किस्न कूं दीया ।।
वो सत सब्द समज उर लीजे ।। भ्रम ग्यान मे मन न दीजे ।।५९।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,हे राजा,तुम इन दोनोको(राम और कृष्ण को),अविगत कहते हो तो इस रामचन्द्रने,वशिष्टको गुरू किया तब वशिष्टने रामचन्द्र को,क्या ज्ञान बताकर किसकी भक्ती करने को कहाँ और कृष्ण ने,दुर्वासा ऋषी को गुरू बनाया,तब दुर्वासाने,कृष्णको कौनसा शब्द दिया। तो वही(जो रामको वशिष्टने और कृष्ण को दुर्वासाने दिया)वही सतशब्द समझकर तुम हृदयमें धारण करो। तुम दूसरे भ्रम-ज्ञानमे निजमन को नही उलझाओ ।।।५९।।

हे राजा,बास्ट मुनि सुण रिख कवाया ।। ज्याँ राम चंद्र कूं गहे समजाया ।।
वो सत ग्यान समज तूं राई ।। ओर भ्रम सब दे छिटकाई ।।६०।।

(उस रामचन्द्र और कृष्णने),किसकी भक्ती किया और दुर्वासाने क्या किया,किसकी भक्ती करने को कहा। उसने अपने शिष्य(कृष्ण)की भक्ती,तो नही ही की होगी। वशिष्ठने क्या किया,किसकी भक्ती किया?उस वशिष्ठ ने भी,अपने शिष्य रामचन्द्र की,भक्ती तो नही ही की होगी। तो उस रामचन्द्र को,वशिष्टने जो ज्ञान दिया,वही सत

ज्ञान,हे राजा,तुम समझो,(रामचन्द्र व कृष्ण इनको अविगत समजना,मन से छोड़ दो ।)और अन्य दूसरे सभी भ्रम,तुम छोड़ दो । ।। ६० ।।

हे राजा,राम चंद्र कूं ने:चळ कीया ।। उनकूं सब्द बाष्ट मुनि दीया ।।
लछमण कूं सिता समजायो ।। कोण सब्द दे भर्म गमायो ।।६१।।

हे राजा,जिस ज्ञान से वशिष्ठ ने,रामचन्द्र को निश्चल कर दिया,उस रामचन्द्र को वशिष्ठ ने, कौनसा शब्द दिया था। लक्ष्मण को,सीता ने उपदेश दिया। सीताने,कौनसा उपदेश लक्ष्मण को देकर,लक्ष्मण का भ्रम दूर किया ।। ६१ ।।

रिषभ देव राजा सो होई ।। राम चंद्र को जन्म न कोई ।।
वांसो देव कोण सुण ध्याया ।। ताँ द्रसण सब देवत आया ।।६२।।

हे राजा,(पूर्वकाल में)ऋषभदेव राजा हुआ था,उस समय,रामचन्द्रका जन्म भी नही हुआ था। उस ऋषभदेवने,किस देवकी भक्ती की,कि,उस ऋषभदेव का दर्शन करने,सभी देवता आये थे । ।।६२।।

हे राजा,महा बीर तिथंगर सारा ।। नेम नाथ को सब्द उचारा ।।
ज्याँने किस्न पूजिया आई ।। वे सो मिल्या ब्रम्ह मे जाई ।।६३।।

महावीर(१-ऋषभदेव,२-अजीतनाथ,३-संभवनाथ,४-अभिनन्दन,५सुमतीनाथ६पद्मप्रभु, ७-सुपार्श्वनाथ,८-चंन्द्रप्रभु,९-सुविधीनाथ,१०-शितलनाथ,११-श्रेयासनाथ,१२बासुपुज्य ,१३-विमलनाथ,१४-अनन्तनाथ,१५-धर्मनाथ,१६-शांतिनाथ,१७कंथुनाथ,१८अहिनाथ ,१९-मल्लिनाथ,२०-मुनीसवृतनाथ,२१-नेमिनाथ,२२-रिष्टनेमनाथ,२३-पार्श्वनाथ, २४महावीर)सभी तीर्थकर और नेमिनाथने,कौनसे शब्द का उच्चारण किया,की,कृष्णने पूजा की । नेमिनाथ,महावीर आदी सभी तीर्थकर,ब्रम्ह मे जाकर मिल गये । ।। ६३ ।।

हे राजा,हस्तामळ पे सब चल आया ।। नाना बिध का ग्यान सुणाया ।।
काँऊं सूं नही बोल्या कोई ।। दत्त के सब्द सिष सो होई ।।६४।।

हे राजा,हस्तामलके यहाँ,सभी चलकर आये और उन सबने,अपने-अपने ज्ञान,नाना विधी से हस्तामलको सुनाया। परन्तु हस्तामल,किसीसे कुछ भी नही कहा। जब दत्तात्रेय आया, तब उनका ज्ञान सुनकर,दत्तात्रेय का हस्तामल शिष्य बन गया । ।। ६४ ।।

हे राजा,ब्रम्हा बिसन महेसर देवा ।। दत्त देव कूँ बुज्या भेवा ।।
हो स्वामी तम कोण कवावो ।। किस्का पुत्र कोण कूं ध्यावो ।।६५।।

हे राजा,ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ने दत्तात्रेय से पूछा,कि,हे स्वामी,तुम कौन हो?किसके पुत्र हो ? किसकी भक्ती करते हो ? ।। ६५ ।।

तब सो देव दत्त सो बोल्या ।। ब्रम्ह ग्यान ताळा सुण खोल्या ।।
मे तीन का पुत्र कवाऊँ ।। अरू ब्रम्ह ध्यान हिर्दा में लाऊँ ।।६६।।

ब्रम्ह ज्ञान का ताला खोलकर,दत्तात्रेय ने कहा,कि,मै तीन देवो का पुत्र हूँ ।(तीन देवों के

पुत्र होने की,हकीकत ऐसी है,कि,एक समय नारदने,सफेद पत्थर(गारगोटी)का,चावल के जैसा चुर्ण बनाकर,पतीव्रता स्त्रीका सत्त देखनेके लिए,संसार मे निकला। वह पहले ब्रम्हा के यहाँ आया,वहाँ ब्रम्हा तो घर पर नही था। सावित्री बैठी थी। सावित्री बोली,कि,नारद आओ व खाना खाओ। तब नारद बोला,कि,तुम्हारे घरका अन्न तो,मै नही खाऊँगा,मेरे पासका चावल पका दोगी,तो वह मैं खाऊँगा। सावित्रीने कहा,कि,लाओ,मै चावल पका देती हूँ। तब नारदने, सफेद पत्थरका बनाया हुआ चुर्ण,सावित्रीके आगे रखा। उस चूर्णको देखकर,सावित्रीने कहा,कि,यह तो सफेद पत्थरका चुर्ण है। इसका मै क्या पकाकर दूँ ?तब नारदने कहा,कि,तुझमे पतीव्रताका सत यदी हो,तो उसके बलसे,यह पका दो,जिसे मै खाऊँगा। तब सावित्री बोली,की,यह तो मुझसे नही पकेगा,परन्तु तुम्हे जो कोई,इसे पकाकर देगा,उसका नाम,लौटकर मुझे बताना। तब नारद,वहाँ से कैलाश(पर्वत)पर गये, वहाँ महादेव तो नही थे,पार्वती बैठी हुयी थी। पार्वती ने भी,नारद को भोजन करने का आग्रह किया। पार्वती से भी नारद ने कहा,कि,मेरे पास का चावल पका दोगी,तो वही मै खाऊँगा। पार्वती ने कहा,कि,लाओ मैं पका देती हूँ। तब नारदने,वही सफेद पत्थर का चुर्ण दिखाया। पार्वती वह सफेद पत्थर का चुर्ण देखकर बोलि,कि,यह तो सफेद पत्थर का चुर्ण है,इसे मै कैसे पकाऊँ ?दूसरा अन्न खाते होगे,तो खा लो। तब नारद ने कहा,कि, आज तो,इसी का ही भात खाना है। दूसरा अन्न नही खाना है। ऐसा मैने निश्चय किया है । संसारमे कोई पतीव्रता होगी,तो वह पतीव्रतपणाके सत बलसे,यह पका देगी,तभी मै खाऊँगा। पार्वतीने कहा,यह गारगोटी का किया गया चुर्ण,मुझसे नही पकेगा। जो कोई तुम्हे यह पका कर देगी,उसका नाम आकर मुझे बताना,जिससे मै देखूँगी की,ऐसी कौन है वह?वहाँ से निकलकर नारद,वैकुंठमे आया,वैकुण्ठमें भी विष्णू नही थे,लक्ष्मी बैठी हुयी थी। लक्ष्मीने भी,नारदको भोजन करनेके लिए,आग्रह किया। तब नारदने,लक्ष्मीसे भी कहा,कि,आज मैने ऐसा निश्चय किया है,कि,मेरे पासका चावल,जो कोई पका देगा,तो उसी को ही,मै खाऊँगा। नही तो,मै नही खाऊँगा। लक्ष्मीने वह देखकर कहा,कि,अरे,यह तो गारगोटी का चूरा है। इसे मै कैसे पकाऊँ?नारदने कहा,कि,तुझमें पतीव्रतापणा हो, (तुम पतीव्रता हो),तो पका दो। लक्ष्मी बोली,कि,मै तो लक्ष्मीवंतके घर-घर घूमनेवाली । वे लक्ष्मीवंत प्रत्यक्ष मुझसे,यदी भोग नही करते तो भी,लक्ष्मी उनके घर मे रहने से,वे लक्ष्मी के योग से,विलास करते है। तो,मै तो यह चावल,पका नही सकती। यह चावल, तुम्हें जो कोई पका कर देगी। ऐसी संसार मे कौन है,उसका नाम,मुझे लौटकर आकर बताना। वहाँ से नारद घूमते-घूमते,अत्री ऋषी के आश्रमपर आये। वहाँ भी अनुसूया ने,नारद को भोजन करने के लिए कहा। उससे भी नारद ने,उसी तरह कहा,कि,मेरे पास का चावल पका दोगी,तो मै उसे ही खाऊँगा। अनुसया ने कहा,कि,लाओ,मै पका देती हूँ । नारदने चावल दिखलाया,उसे अनुसूया ने देखा। अनुसूया ने,नारदको पहचाना नही था।

अनुसूया साधू समझकर,उससे कहा, कि,यह गारगोटी का चावल,मै पका तो दूँगी,परन्तु पतीकी आज्ञा लिए बिना,मै कुछ भी नही कर सकती। इसलिए पती की आज्ञा लेकर,फिर पका देती हूँ। अनुसूयाने अत्रीके पास आकर कहा,कि,कोई साधू आया है और गारगोटीका चूरा करके लाया है और वह कहता है,कि,यह चावल तुम पका दोगी,तो मै भोजन करूँगा । तो आपकी क्या आज्ञा है?तब अत्री बोले,अरे,यह तो नारद होगा। उसके गारगोटीके चावल,घरमे लाकर मत पकाओ,नही तो वह,तुम्हारे उपर(आळ)दोष लगायेगा और कहेगा, कि,मेरा चावल तो फेंक दिया और अपने घरका चावल,पकाकर लायी है। इसलिए तुम ऐसा करो,कि,यह पानी का कमण्ड़ल ले जाओ और उसके(पदर)(आचल या फांड़)मे ही,वह गारगोटीका चूरा छोड़ने को कहो और इस कमण्ड़ल से,एक चुल्लु पानी लेकर, उसके पदर में ही(आँचल मे ही)पानी छिड़क दो,जिससे तुम्हारे पतीव्रताके प्रभाव से, वह चावल बनकर,पक जायेगा। वैसे ही,अनुसूयाने किया,जैसा अत्री ऋषी ने बताया। वैसा करते ही,गारगोटी का चूरा पककर,भात बन गया। नारद वहाँ भोजन करके, बड़ी खुशी से, वहाँ से चला और ब्रम्हा लोक मे आकर,सावित्री से बोला,कि,तुमसे तो भात पका नही, परन्तु अनुसूयाने पका दिया,वह मै खाकर आया हूँ। इतनी बात सुनते ही, सावित्रीको मत्सर पैदा हुआ,कि,मुझसे जो नही पका,वह चावल पका कर देनेवाली,मेरी अपेक्षा , अधिक ऐसी कौन है,उसका पतीव्रत,मै खण्ड़न किए बिना रहूँगी नही। ऐसा कहकर,रूठ कर बैठ गयी। तब नारद,ब्रम्हा लोक से,कैलाश(पर्वत)पर आया,वहाँ पार्वती ने कहा,कि, नारद,तुम्हे वह चावल किसने पका कर दिया। तब नारदने कहा,कि,तुमसे तो नही पका, परन्तु अनुसूयाने,उसे पका दिया। वह मै खाकर आया हूँ। इतना सुनते ही,पार्वती को भी,मत्सर उत्पन्न हुआ। और बोली,कि,मेरी अपेक्षा,अधिक संसार मे कौन है?उसे मैं नीचा दिखाये बिना,नही रहूँगी। ऐसा कहकर,रूठ कर बैठ गयी। नारद,कैलाश से वैकुण्ठ मे गया। वहाँ भी लक्ष्मीसे कहा,कि, अनुसूयाने,मेरा चावल पका दिया। उसके पैरोंकी धूल किाभी,बराबरी तुमसे नही हो सकती है। लक्ष्मीने कहा,कि,देखती हूँ,मै उसका पतीव्रतपणा ,कैसा है वह। उसका पतीव्रत खण्ड़न किए बिना,मै नही रहूँगी। ऐसा कहकर,वह भी रूठ कर बैठ गयी। ब्रम्हा,विष्णू,महादेव उस दिन मृत्यु लोकमे आये थे,वे पुनःअपने-अपने लोकमें गये,ब्रम्हा अपने ब्रम्हा लोकमे गया,वहाँ देखता है,तो सावित्री रूठकर बैठी है । तब सावित्रीने कहा,कि,अत्री ऋषीकी पत्नीका,पतीव्रत नष्ट करके आओ,तभी यहाँ आओ,नहीं तो,यहाँ मत आओ। तब ब्रम्हा,विचारोंमे पड़ गये और बोले ,कि,अत्री तो मेरा पुत्र है और अनुसूया,यह मेरी पुत्रवधू है,फिर तुम ऐसी बिना विचार से,कैसे बोलती हो?तब सावित्री ने कहा,कि,अनुसूया का पतीव्रत पणा,यदी नष्ट किए नही,तो तुम तुम्हारे और मै मेरी। मेरे पास मत आओ। ब्रम्हा विचारोंके संकटमे पड़ गया और कैलाश पर,महादेव के पास,इसकी सलाह पूछनेके लिए आया। यहाँ भी पार्वती और महादेव की,यही तकरार चल रही थी,

महादेव ने,ब्रम्हा से पूछा,क्यों किधर आये?वहाँ ब्रम्हा कि,तुम्हारे यहाँ पार्वतीकी और तुम्हारी,जो तकरार चल रही है,वही तकरार,हमारे यहाँ भी हुयी । इसलिए मैं, सलाह लेने के लिए आया था,तो यहाँ भी,यही हकीकत दिखाई दी,अब आगे,इसका क्या विचार किया जाय?तब महादेव बोला,कि,विष्णू के पास चलो,वो कहेंगे,वैसे ही करेंगे । फिर ब्रम्हा और महादेव ये दोनो,विष्णू के पास,वैकुण्ठ मे गये। तो वहाँ देखते है,कि,विष्णू की और लक्ष्मी की,कड़ाड़े की(जोर-जोरसे),तकरार चल रही थी। लक्ष्मी कह रही थी,कि, अनुसूया का पतीव्रतपणा,खण्ड़न करना ही चाहिए। वह हमारी अपेक्षा,अधिक कहाँ से आ गयी?विष्णू ने,ब्रम्हा और महादेव से पूछा,तुम इधर-किधर आये?ब्रम्हा ने,घटी हुयी,सारी बाते कह दी। इसी के लिए,सलाह पूछनेके लिए,यहाँ आये थे। फिर तीनोंने ही विचार करके,तीनो की सवारी,अनुसूयाका पतीव्रत,खण्ड़न करनेके लिए निकली,वे तीनो ही साधूका भेष बनाकर,अत्री ऋषीके आश्रममे आये। वहाँ अनुसूयाने,भोजनके समय पर,आये हुए अतिथी का, अतिथ्य सत्कार करनेके लिए,भोजन करनेके लिए,कहने लगी। वे तीनोही बोले,तुम एकदम नग्न होकर,एक बिछौनेके उपर,हमारे पास सोयेगी,तो तुम्हारा अतिथ्य, हम स्वीकार करेंगे। नही तो,हम तुम्हारे अतिथ्य को,अस्विकार करके,लौट जायेंगे। अनुसूया बोली,कि,मै पती की आज्ञाके बिना,कोई काम नही करती हूँ। इसलिए,मै पती की आज्ञा लेकर आती हूँ,फिर पती जैसी आज्ञा करेंगे,वैसी मै करूंगी। फिर अनुसूया,अत्री ऋषी के पास आकर बोली,कि,तीन साधू आये है और वे कहते है,कि,तुम नग्न होकर,एक बिछौने के उपर,पास सोयेगी,तो हम तुम्हारे यहाँ भोजन करेंगे,नही तो हम,नही खायेंगे। तो आप की,क्या आज्ञा है?अत्री ऋषी बोले,कि,उन साधुओं से,ऐसा कहो की,ठीक है। पहले तुम भोजन कर लो और फिर तुम लोग जो कहते हो,वह बात मुझे कबूल है। अनुसूया जाकर,उन तीनों से,तुम्हारा कहना हमें मंजूर है,ऐसा कहकर,भोजन करने के लिए बैठाया। फिर वे तीनो ही,भोजन करने के बाद बोले,कि,तुम दिए गये वचन,पूरे करो,की,हम चलें। अनुसूया बोली,कि,मै पतीसे पूछकर आती हूँ। अनुसूया अत्रीके पास आकर बोली,कि,अब क्या करूँ?तब अत्री बोले,कि,यह पानीका कमण्ड़ल ले जा। इसमे से,पानीसे चुल्लु भरकर,उन तीनो पर,पानी छिड़को। जिससे तीनो ही,छःसात महीनेके, बच्चे बन जायेंगे। फिर तुम उनके पास,बेशक सो जा । जिससे तुम्हारा वचन पूरा होगा । और ये छःसात महीनेके(अर्भके)(सतवाँसा)होनेके कारण,तुम्हारा पतीव्रत, इनसे खण्ड़ित नही होगा। अनुसूयाने कमण्ड़ल लेकर,उसमे से चुल्लु भर पानी लेकर,उन तीनो पर छिड़का,उसके साथ ही,वे तीनों छः-छः महीने के बच्चे बन गये,फिर अनुसूया नग्न होकर,उनके पास सो गयी । फिर उन तीनों को,स्तनपान कराया । एक पालनेमे ड़ालकर, घरके कार्योमे लग गयी । वे पालनेमें हगते-मूतते थे । इस तरह वे,विष्टा-मुत्रमे,एकदम डूब गये । विष्टा-मुत्र,उनके नाक-मुँखमे जाने लगा। उन तीनोंके शरीर पर,विष्टा-मुत्रका

लेप लग गया । इस तरहसे,वे छः-छः महीने तक,एक ही पालनेमे,विष्टा-मुत्र मे लोटते रहे । इधर सावित्रीने,बहुत दिन हो जानेसे,विचार किया,कि,मैने उन्हे क्यों कहा और क्यों हठ किया?वे वहाँसे क्रोधित होकर गये और फिर लौटकर आये नही,ऐसी चिन्ता करते हुए,सावित्रीने विचार किया,कि,यहाँसे कैलाशपर गये थे,वही होंगे । फिर वह(सावित्री), कैलाश(पर्वत)पर गयी। वहाँ भी पार्वती,अकेले चिन्ता करते हुए बैठी हुयी थी। फिर दोनोने बाते करके,पार्वती बोली, कि,यहाँसे दोनो वैकुण्ठमें गये थे,वही होंगे। ऐसा बोलकर,वे दोनो वैकुण्ठमें गयी,वहाँ लक्ष्मी भी,चिन्ता करते हुए बैठी थी। उन तीनोको,एक साथ मिलने पर,नारद आकर,तीनों से कहा, कि,तुम्हारे पती,विष्ठा-मुत्र लपेट रहे है। और वही खाते भी है और वही हगते भी है। ऐसे विष्ठा-मुत्रमे लोटते हुए,तुम्हारे पती अनुसूयाके यहाँ,पालनेमे,मै देखकर आया हूँ। फिर वे तीनो भी,अत्री ऋषीके आश्रमपर आई। वहाँ आकर अनुसूयासे पूछा,कि,हमारे पती कहाँ है?अनुसूयाने,पालनेकी तरफ अंगुली दिखाकर कहा,कि,उस पालनेमे है। परन्तु अपना-अपना पती पहचान लेना। नही तो,पर पुरूषका स्पर्श होनेसे,तुम्हे दोष लगेगा। वे तीनो जाकर देखती है,तो तीनोही विष्टा-मुत्रसे भरे रहनेके कारण,नही पहचाने गये। तब वे तीनोने कहा,कि,हमसे पहचाना नही जाता । तब अनुसूया बोली,कि,समर्थ देवों की,समर्थ पत्नीयों,तुम इतना घमंड कर रही थी और मेरा पतीव्रत खण्डन करनेके लिए,इतनी खटपट की,तो अब तुम,तुम्हारे पती पहचान लो । पर पुरूषको स्पर्श मत करना। तब वे(पार्वती,सावित्री व लक्ष्मी)अनुसूयाके, पैरोमें गिरकर कहा,कि,तुम्हारे पतीव्रताके तेजके आगे,हमसे पहचान नही जाता है। हमारे पती हमे दो। तब अनुसूयाने,पतीकी आज्ञासे,कमण्डलके पानीका छींटा छिड़कते ही,तीनो भी(ब्रम्हा,विष्णू,महादेव)अनुसूयाके चुल्लुमे ड़ाले और वह पानी पीनेको कहा। उस चुल्लुके पानी से, मैने जन्म लिया।),इस तरह से,मै तीन देवोंका पुत्र हुँ व मै ब्रह्म ध्यान हृदयमे करता हुँ । ।।६६।।

हे राजा,काग भुसंडी सुण रिख क्रावे ।। वेसो सब्द कोण मुख गावे ।।
वाँरी ऊमर मे औतारा ।। अनंत क्रोड सो चले बिचारा ।।६७।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज,राजासे कहते है,कि,राजा,काक भुसुंड़ी ऋषी था । उस काक भुसुंडी ने मुखसे,कौनसे शब्द का सुमिरन किया । उस काक भुसंड़ीकी उमर में,ये तुम जो कहते हो,वे अवतार(राम-कृष्णदिक)अनन्त कोटी होकर चले गये ।(और काग भुसंड़ी,वही का वही है ।) ।। ६७ ।।

हे राजा,रूम रिख क्या सिंवरे भाई ।। नेःचळ अमर हुवा जग माई ।।
वो सो सब्द सोज उर लीजे ।। तन मन अरप काज सो कीजे ।।६८।।

हे राजा,रोम ऋषी(लोमष)किसका सुमिरन करता है?वह लोमष ऋषी,इस संसारमें निश्चल और अमर हो गया है । वह जो लोमष ऋषी,(उसके पिता ब्रम्हा और उसकी

आयु अपने मनुष्योंकी,तीन जलदी,एक शंकु,तीन महाद्म,पाँच निखर्व,दो खर्व,आठ अब्ज,बत्तीस कोटी वर्षो मे,एक ब्रम्हा मरता है। तब लोमष ऋषी,पिता के लिए मुण्ड़न करने के लिए,अपना एक केश उखाड़ देता है। ऐसा कहते है। अब वह लोमष कितने वर्षो का हुआ?इसकी कोई कल्पना भी कर सकता है क्या?ऐसा जो लोमष ऋषी)जिस शब्द का सुमिरन करता है। उसी शब्द का तुम शोध करके,हृदयमें धारण करो। उसे अपना तन और मन अर्पण करके,अपने जीव का काम कर लो । ।। ६८ ।।

----------||----------

----------||----------||||

हे राजा ।।

अगस्त मुनि क्यां सिंव्रण कीयो ।। तिण सुण समुँद्र घूँट भर पीयो ।।
वाँ सुर्गुण कब सेवा संजोई ।। ज्याँरी दछा अेसी सुण होई ।।६९।।

हे राजा,अगस्त मुनीने किसका सुमिरण किया,कि,जिस योगसे(जिस समुद्रपर सेतु बांधकर,बड़े प्रयाससे लंकामे गये,वही समुद्र)अगस्त मुनीने,एक घूँटमे ही पी गये ।(एक तो नदीके उपर पुल बांधकर,नदीके पार जाता है और एक नदीका सारा पानी ही पी जाता है । तो इन दोनोमे बड़ा कौन?)इस अगस्त मुनीने,सगुण देवकी भक्ती की थी,कि,उसकी दशा ऐसी थी।(की,अवतार(रामचन्द्र)समुद्रके पार नही जा सके और अगस्त तीन चुल्लू मे,समुद्र को पी गये ।) ।। ६९ ।।

हे राजा,गोपीचंद भर्यरी जाणो ।। गोरख नाथ जलंदर ठाणो ।।
याँ औतार न मान्या कोई ।। अे कोण सब्द ले नेःचळ होई ।।७०।।

हे राजा,गोपीचन्द्र,भर्तृहरी ये और गोरखनाथ,जालंधर इन्होने भी,कोई अवतार को नही माना । तो ये कौनसा शब्द लेकर,निश्चल हो गये । ।। ७० ।।

हे राजा,मुसलमान औतार न माने ।। हिंदु तके पीर नही जाने ।।
जैन पीर औतार ही त्याग्या ।। वे सो कहो कूण सूँ लाग्या ।।७१।।

हे राजा,ये जो मुसलमान है,वे अवतारको नही मानते। हिन्दू पीरको नही मानते । जैन धर्म वालेने,अवतार व पीर दोनोंका त्यागकर दिया। व(तिर्थकर)किससे लगे रहे?(किस पर अवलंबित रहे ।) ।। ७१ ।।

हे राजा,सब को ध्रम अेक सो साचा ।। ओर ध्रम सब ही सुण काचा ।।
उपजे खपे होय मिट जावे ।। से सब ही ध्रम माया क्रावे ।।७२।।

हे राजा,सभीका जो एक धर्म है,वही धर्म सच्चा है । और दूसरे जो अलग-अलग धर्म है,वे कच्चे(झूठे)है,वे दूसरे धर्म उत्पन्न होकर,जल्दी ही मिट जाते है। वे सभी धर्म माया के है ।७२।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। सब का ध्रम अेक किम होई ।। अे हिंदु तुर्क कहीजे दोई ।।

क्रिपा कर मोकूँ समझावो ।। वो अेक ध्रम सो मोय बतावो ।।७३।।

तब राजाने कहा,कि,हे स्वामीजी,सभीका एक ही धर्म कैसे होगा?हिन्दू का धर्म दूसरा और मुसलमानका धर्म दूसरा है।(ये दोनो धर्म अलग-अलग है ।)तो कृपा करके,मुझे यह समझाकर बताईये?वो सभी का(हिन्दूका व मुसलमानका)एक धर्म कौनसा है?वह मुझे बताईये? ।।७३।।

श्री सुखो वाच ।।

हे राजा,बावन अंछर न्यारा होई ।। पण अेक सब्द सूं बोले सोई ।।
जिण सूं सुण पेदा वे हूवा ।। वोही हरफ बोलावे जूवा ।।७४।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,हे राजा,बावन अक्षरे अलग-अलग है,परन्तु ये सभी अक्षरें,एक शब्दसे(श्वाँससे)बोली जाती है । जिस श्वाँससे,ये बावन अक्षरें पैदा हुयी है,उनमेसे वही शब्द(श्वाँस यानी सोऽहं)है । इस श्वाँस से ही शब्द,अलग-अलग बोले जाते है ।।।७४।।

हे राजा,अेक हर्फ का बावन होई ।। बावन हरफ अेक मे सोई ।।
उनही सूँ वे पेदा कीजे ।। वोही सब्द वाँही पर दीजे ।।७५।।

हे राजा,इस एक हरफ(स्वाँससे)सभी शब्द,बावन अक्षरें,एक श्वाँसमे आ गयी । तो इस स्वाँस से,बावन अक्षरें पैदा हुयी।(और बावन अक्षरें,एक स्वाँसमे ही है ।)तो इस स्वाँससे ही पैदा करके,वही सोऽहं,इन बावन अक्षरोंके उपर दो । ।।७५ ।।

हे राजा,बावन हर्फ को हे ध्रम स्वासा ।। सास सब्द पर मन की आसा ।।
मन ऊपर सुण चेतन होई ।। चेतन परे पुर्ष नही कोई ।।७६।।

इस बावन अक्षरोंका धर्म,स्वाँस है । और इस स्वाँस शब्दके उपर,मनकी आशा है । और मन के उपर,चैतन्य से परे,कोई पुरूष नही है । ।। ७६ ।।

हे राजा,युँ सुण ध्रम सकळ का सोऊँ ।। ता ऊपर सुण कहिये ओऊँ ।।
ओऊँ परे ब्रम्ह सत्त जाणो ।। ओ ध्रम सब को अेक बखाणो ।।७७।।

हे राजा,ऐसे सभीका(हिन्दू-मुसलमानका)एक धर्म,यह सोऽहं(श्वाँस)है । इस सोऽहं शब्द के उपर ऊँ है और ऊँ के परे जो है,वही सत ब्रम्ह समझो । यही धर्म,सभी का एक है । ।।७७।।

हे राजा,औतार ब्रम्ह ही क्रावे ।। तो ब्रम्ह ध्यान मे सब ही आवे ।।
न्यारो कछु रहे नही कोई ।। सब औतार ब्रम्ह मे होई ।।७८।।

हे राजा,ये सभी अवतार ब्रम्ह ही है । ऐसा तुम कहते हो,तो ब्रम्ह ध्यान करने मे,ये सभी (अवतार)आ गये । (ब्रम्ह ध्यान करने पर)फिर ये(अवतार और दूसरे देव),अलग कोई रहे नही,कारण कि,यदी सभी अवतार ब्रम्ह मे ही है ।(तो ब्रम्ह ध्यान मे,सभी अवतार आ गये ।) ।।७८।।

हे राजा,औतार सरावे कोई ।। तो ब्रम्ह लग ओ नाणो होई ।।
तां ते ध्यान ब्रम्ह को कीजे ।। तज ड़ाळा सुण मूळ गहिजे ।।७९।।

हे राजा,यदी तुम अवतारों की शोभा करते हो तो अवतारों का ब्रम्ह तक जानेका हिंदाण (रोख)(निशाण या चिन्ह)है,(या ब्रम्ह तक का लाभ होगा),(या ब्रम्ह तक जाना होगा ।) इसलिए ब्रम्हका ही ध्यान करना चाहिए । सभी ड़ालियाँ(अवतार और दूसरे देव)छोड़कर एक मूल बिज ब्रम्ह ही ग्रहण करना चाहिए ।।।७९।।

हे राजा,निर्गुण सर्गुण सुण होई ।। ता मध फेर कछु नही कोई ।।
अब गुण प्राक्रम न्यारो सुण क्रावे ।। इण कारण ब्रम्ह सुळज्या ध्यावे ।। ८० ।।

हे राजा,सुनो,सगुण और निर्गुण जो है,उस सगुण और निर्गुणमे,कुछ भी फेर(फरक)नही है । अब इसका(निर्गुण व सगुण का)गुण और पराक्रम अलग है । इसलिए जो समझकर,खुले हुए होकर(अलग)हो गये है,वे सुलझे हुए(संत),सिर्फ ब्रम्ह की ही भक्ती करते है। ।।८०।।

हे राजा,ज्युँ सुण नाज आण के कोई ।। भोजन कऱ्यो ब्होत बिध लोई ।।
हे सागे पण प्राक्रम जूवा ।। सुण राजा युं सुर्गण हूवा ।।८१।।

हे राजा,जैसे कोई अनाज लाकर,तरह-तरहके भोजन बनाता है । अन्न तो वही है,परन्तु भोजन का पराक्रम(प्रकार),अलग-अलग हो जाता है । हे राजा,तो सुनो । इस अलग-अलग भोजनके जैसे,सगुण है । (और अन्न के जैसा,निर्गुण है ।) ।। ८१ ।।

हे राजा,नारी पुरष क्हावे दोई ।। अे पांच तत्त का सब ही होई ।।
पण गुण प्राक्रम न्यारा सो जाणो ।। यूँ सुर्गण सुण ब्रम्ह बखाणो ।।८२।।

हे राजा,स्त्री व पुरूष ये दो कहलाते है,स्त्री व पुरूष ये दोनो भी,पाँच तत्वोसे ही बने है, परन्तु(पुरूष का)पराक्रम और गुण अलग और(स्त्रीका)गुण अलग है । इसी तरह सगुणका गुण अलग और ब्रम्ह का पराक्रम अलग । ।। ८२ ।।

हे राजा,जेसो किसब करे नर कोई ।। तेसो नाँव प्राक्रम होई ।।
वोही करसो वोही साध क्रावे ।। वोही चोर जुग स्हा गावे ।।८३।।

हे राजा,मनुष्य जैसा धंधा करेगा वैसा ही उसका नाम हो जायेगा । वह जैसा धंधा करेगा वैसा ही उसमे पराक्रम हो जायेगा । जैसे कोई मनुष्य(जब खेती करता था तो लोग उसे) किसान कहते थे । खेती मे पैदावार नही होनेसे घाटा लगनेसे वह साधू बन गया तब लोग उसी मनुष्यको साधू कहने लगे । (साधू बन जाने पर जो मन मे आये वह खानेको और खर्च करने को पैसे नही मिलनेसे उसने चोरी किया और पकड़ा गया तब लोग उसको ही चोर कहने लगे और वह मनुष्य कैद भोगकर,लौटकर आने पर उस चोरी किए गये मालके पैसेसे सावकारी करने लगा)तब लोग उसको ही साहुकार कहने लगे ।।।८३।।

हे राजा,ओळो असल नीर को क्रावे ।। यूं औतार ब्रम्ह सूं आवे ।।
पण जळको काम जळ ही सुं होई ।। ओळे सूं सुण सजे न कोई ।।८४।।

हे राजा,(उपरसे आकाशसे गिरे हुए)ओले,अच्छे पानीके बने हुए रहते है। इसीतरह अवतार,(आसमानके ओलेके जैसे),ब्रम्हसे आये हुए है। परन्तु पानीका काम,पानीसे ही होगा। ओले से(जब तक ओला है,तब तक),पानी का काम नही हो सकता है । ।।८४।।

हे राजा,ओळो गळे नीर होय जावे ।। जब उण जळ मे फेर न क्रावे ।।
पण ओळो नाव रहे नही कोई ।। निर ही नीर पुकारे लोई ।।८५।।

हे राजा,जब ओला गलकर,उसका पानी बन गया,फिर उस पानीको,(ओला कोई भी नही कहेगा),उस ओलेके पानीमे और दूसरे पानीमे,कोई भी फेर(अन्तर)नही रहेगा ।(फिर उस ओलेसे बने हुए पानीको,ओला है,ऐसा)कोई भी नही कहेगा। सभी लोग उसे,पानी ही कहेंगे। ।।८५।।

हे राजा,यूं औतार ब्रम्ह सूं आवे ।। फेर उलट ब्रम्ह माँय समावे ।।
देहे को नाँव गडे. सम जाणो ।। ब्रम्ह नीर सो आद बखाणो ।।८६।।

हे राजा,जैसे आकाश से पानी का,ओला बन कर आता है,उसी तरह से,ये अवतार,ब्रम्ह से आते है। और पुन: उलट जाकर,ब्रम्ह मे मिल जाते है। तो(इस अवतारके),देहका नाम, ओला जैसा समझो।(जैसे पानीसे ओला बना,उसी तरह,उस ओलेका पुन: पानी बना,उसी तरह,ब्रम्हसे अवतार आये और पुन: ब्रम्हमें जाकर मिल गये,उस पानीके ओलेका,पुन: पानी बना,वैसे ही अवतार ब्रम्ह से आये व पुन: ब्रम्ह ही हो गये ।) ।। ८६ ।।

हे राजा,सुण बचन हमारा ।। बूजुँ लछन ग्यान तुमारा ।।
धर औतार जग मे आया ।। किण कारण हर तोय पठाया ।।८७।।

हे राजा,मेरे वचन सुनो,मै तुम्हारा ज्ञान और तुम्हारा लक्षण तुमसे पूछता हूँ । वह तुम बताओ?तुम अवतार धारण करके,संसार मे आये हो। तुम्हे हर(रामजी)ने,किसलिए संसार मे भेजा है ? ।। ८७ ।।

राजो वाच ।।

हो जन राय न्याव के ताँई ।। हर भेज्या मोय जग के माँई ।।
सब सो सुखि रहे सो करणा ।। अे लछ सोज नाँव उर धरणा ।।८८।।

तब राजाने कहा,कि,न्याय करने के लिए,मुझे संसार मे हर(रामजी)ने भेजा है। सभी (प्रजा)सुखी रहेगी,ऐसे काम करने के लिए। सभी लक्षण शोधकर,नाम हृदय मे धारण करने के लिए । ।।८८।।

सुखो वाच ।।

हे राजा,तम लेता हो कन देता सोई ।। क्रता हो के अक्रता होई ।।
सूता हो कन जागो राजा ।। हे सरम के नही घट लाजा ।।८९।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,कि,हे राजा,तुम लेनेवाले हो,की,देनेवाले हो?कर्ता हो, की, अकर्ता हो?हे राजा,तुम सोये हो,की,जागृत हो?और भी तुझे शर्म है,की,नही या तेरे घट मे लाज है,की,नही ? ।। ८९ ।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। लेता हूँ अर देता सोई ।। क्रता होयर अक्रता होई ।।
सूताँ हूँ पण जागुँ स्वामी ।। तम जाणत सब अंतर जामी ।।९०।।

तब राजा बोला,कि,हे स्वामीजी,मै लेता भी हूँ और देता भी हूँ। और मै कर्ता होकर, अकर्ता हूँ और भी मै,सोया हुआ भी हूँ ,जागृत भी हूँ। आप तो सभी जानते हो,आप अन्तर्यामी हो। (आप से छुपा हुआ,क्या है ?) ।। ९० ।।

सुखो वाच ।।
हे राजा ।।

क्या तम लेवो क्या तम देवो ।। केसे क्रता अक्रता से वो ।।
केसे सूता केसे जागो ।। केसे जक्त काम को धागो ।।९१।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले,कि,हे राजा,तुम लेते क्या हो और क्या देते हो?तुम कर्ता कैसे हो और अकर्ता कैसे रहते हो?और तुम सोये कैसे हो व जागृत कैसे रहते हो?और संसार मे जीते और मरते किसलिए और क्या काम करते हो ? ।। ९१ ।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। देऊं तन मन धन जन के तांई ।। लेऊँ गुण सतो गुण माँई ।।
जाग्रत रीत आद की जोई ।। सूता राम भरोसे सोई ।।९२।।

राजाने कहा,हे स्वामीजी,तन,मन,धन यह मै जनको(संतोको)देता हूँ । सतोगुण अन्दर लेता हूँ ,(धारण करता हूँ ।)और जागृत रहना,मेरी आदी की(पहले की)जो रीती है,वह देखता हूँ । (यह मेरा जागृत रहना है ।)मेरा सोना इस तरहसे है,कि,मै रामजी के,भरोसे पर रहता हूँ । (की,जो रामजी करेंगे,वही अच्छा ।)इस तरहसे,रामजी के भरोसे मै रहता हूँ । वही मेरा सोना है । ।।९२।।

हो स्वामीजी ।। क्रता राज अनीत अक्रता ।। जीत हमारे जीवन मरता ।।
काम हमारे रिछया करणी ।। लज्जा नीत अनीत न धरणी ।।९३।।

हे स्वामीजी,मै राजकर्ता हूँ। और अनिती का अकर्ता हूँ। संसार मे जीतने के लिए,(विजय मिलने के लिए),जीना और मरना है । और प्रजाकी रक्षा करना,मेरा काम है और निती से नही चलने की व अनिती करने की लाज है । ।। ९३ ।।

सुखो वाच ।।

हे राजा,आ तो बात असल नही होई ।। आवा गवण मिटे नही कोई ।।
में कहुँ ग्यान धार तूं राजा ।। ज्यूँ सब ही सरे तुमारा काजा ।।९४।।

तब सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि हे राजा,यह तुम्हारी बातें असली (अच्छी) नही है। (इन तुम्हारी बातोंसे)आवागमन,(जन्मना,मरना नही मिटेगा । मै तुम्हे जो ज्ञान बताता हूँ। वह तुम धारण करो। हे राजा,(उससे)तुम्हारे सारे कार्य सरेंगे,(होंगे)(पूर्ण होंगे ।) ।।९४।।

हे राजा,दीजे मन संतन के ताँई ।। लीजे भेद ब्रम्ह को माँई ।।

कर्ता होय भजन सो कीजे ।। आसा त्याग अकर्ता रीजे ।।९५।।

हे राजा,संतो को तो केवल मन ही देना चाहिए।(तुम्हारे तन और धन का,संत क्या करेंगे? सिर्फ मन दो। इस तरह से देनेवाले बनो।)ब्रम्हका भेद अंदर(हृदयमें)लो ।(इस तरहसे लेनेवाला बनो।)और कर्ता ऐसा बनो की,निजनाम का भजन करो और माया के फलो की आशा छोड़ दो । इस तरह से अकर्ता बनकर रहो ।।।९५।।

हे राजा,जाग्यो ग्यान उदे कर भाई ।। सोवो जाय स्माध लगाई ।।
चोरासी की सरम रखावो ।। लज्या काढ कुलछ गमावो ।।९६।।

हे राजा,ज्ञान उदय करके जागृत रहो और सोना,समाधी लगाकर सोवो। और लक्ष चौरासी योनीयोंमे जानेकी शर्म करो और लज्जा,तुम्हारे अन्दर जो कुलक्षण(बुरे लक्षण)है,वह काढ़ो (बाहर निकाल दो),(ऐसी शर्म रखो ।)।। ९६ ।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। आ तो बात जोग की होई ।। गृस्त सुँ सुण सजेन कोई ।।
त्यागे जक्त गृह बन मे जावे ।। से जोगी वा पद कूँ पावे ।।९७।।

तब राजाने कहा,कि,हे स्वामीजी,ये(आपने बताया,वो)बाते तो,योगीकी(योगकी साधना करनेवाले,योगी की)है। ये बातें गृहस्थाश्रम मे,कोई भी साधे नही जाती और घरका और संसारका त्याग करके,जो वनोंमे(जंगलोंमे)जाते है,उसी योगीको,यह भेद मिलता है।।९७।।

श्री सुखो वाच ।।

हे राजा,जोग मोख नही जावे ।। ने:छे जब तब जंवरो खावे ।।
जंगळ गयाँ मोख जे होई ।। तो बनका जीव मिले उड़ सोई ।।९८।।

तब सतगुरू सुखरामजी महाराजने कहा,कि,राजा,योग है,तो योगसे भी,मोक्ष में नही जाते है।(योगीको)(योग साधना करनेवालेको),निश्चित ही जभी ना तभी,यम खा जायेगा। और जंगल मे जानेसे,यदी मोक्ष होते रहता,तो ये जंगलोके सभी जीव(जंतू)उड़कर,मोक्ष मे चले गये होते । ।।९८।।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। बन का जीव भेद नहि जाणे ।। राम राम मुख कबुहन आणे ।।
ओ तो अरथ दाय नही आवे ।। बिन बन गया मोख किम पावे ।।९९।।

राजा ने कहा,कि,हे स्वामीजी,वनों के जीव भेद नही जानते है । वो वनों के जीव,मुँख से कभी,राम-राम नही कहते है ।(वनोंके पशु-पक्षियोंको,भेद नही मालुम है और वे मुँखसे कभी,राम-राम नही कहते है,फिर वे मोक्षमे कैसे जायेंगे?)हे स्वामीजी,यह आपका कहना,तो मेरे मनको पसंद नही पड़ता है,कि,वन मे गये बिना,मोक्ष कैसे मिलेगा? ।।९९।।

सुखो वाच ।।

हे राजा,भजन भेद सत्त यो होई ।। गृह अर बन सत्त नही कोई ।।
भजन भेद का सुण इधकारा ।। ग्रेहे त्याग दोनू सूं न्यारा ।।१००।।

हे राजा,भजन करनेका भेद लेकर,भजन करना यही सत्त है। गृह और वन ये कोई भी(भजन किए बिना),कुछ भी सत्त नही है। जिसने भजनका भेद लेकर,(भजन कैसे करना चाहिए),इसका भेद लेकर,जिसने भजन किया है,उसके अधिकार सुनो । यह भजन करने का भेद,गृह व त्याग दोनो से भी,न्यारा(अलग)है । ।।१००।।

बिश्वामित्र बन को जोगी ।। वाष्ट मुनि गृह संजोगी ।।
आधी तपस्या गुर कूँ दीनी ।। अेक पलक सत संगत लीनी ।।१०१।।

विश्वामित्र वनका योगी था और वशिष्ठ मुनी यह,गृह संयोगी(गृहस्थी)था।(उसी विश्वामित्र ने,वनोंमे साठ हजार वर्षोतक,तपश्या करके आकर),आधी तपश्या(तीस हजार वर्षो की), गुरूको(वशिष्ठको)भेंट कहकर,अर्पण किया।(तब वशिष्ठने,प्रसाद कहकर),एक पलकी सतसंगत,(विश्वामित्रको)दिया । ।।१०१।।

प्रीत घटी अर मन पिस्तायो ।। समझे नही बिस्न समझायो ।।
हर की माया तोय भ्रमावे ।। जाय सेंसपे न्याव चुकावे ।।१०२।।

विश्वामित्र को,जो गुरूसे प्रिती थी,वह घट गयी। और मनमे पश्चाताप करने लगा । (कि,मैने तो इतना कष्ट सहन करके,तीस हजार वर्षोकी तपश्या चढ्ढाई(दिया)।)और इस(ठग ने,सुखसे घरमे बैठकर,की हुयी),एक पल की सतसंगत,मुझे दिया ।(इस प्रकार, विश्वामित्र को क्रोध आकर,जिससे-उससे कहते फिरा,कि,मेरे गुरूके लक्षण देखो,मुझे ठग दिया,जिसके-जिसके पास,विश्वामित्र गया,तब वे सभीने,उनसे कहाँ,कि,गुरू तो प्रसाद, थोडासा ही देते है,पंरतु उस प्रसाद में,गुण बहुत रहता है। ऐसा सभी कहने लगे। तब विश्वामित्रने,विष्णू के पास जाकर,सब बताया। विष्णू ने,विश्वामित्र को(जैसा सभी ने कहाँ था),वैसे ही विष्णू ने भी,विश्वामित्र को बताकर समझाया,परन्तु विश्वामित्र,विष्णू से विवाद करके कहाँ,कि,तुम भी,सभी के जैसे बाते करते हो क्या?मै तो आपको,भला आदमी समझता था,तब विष्णू ने,मनमें कहाँ,कि,यह तो ऐसा कुछ सुनता नही है,इससे माथापच्ची कौन करे?ऐसा विचार करके,विष्णूने विश्वामित्र को,यह न्याय करनेके लिए, शेषनागके यहाँ जाओ। मुझे तो एक मुँह है,तुमसे ज्यादा बोलने की,मुझे फुरसत नही है, शेषका हजार मुँख है। वह तुमसे एक मुँखसे बोला,तो भी उसके,नौ सौ निन्यानवे मुँह खाली रहेंगे। तुम वहीं पाताल में),शेष के पास जाओ। हरी की माया,तुम्हे भरमा रही है। ।। १०२ ।।

सारो धरण सेंस यूँ बोल्या ।। तप के जोर ब्रेहमंड तोल्या ।।
धसकी ध्रण मुने सर धूज्यो ।। सत्तगुर सब्द साच कर पूज्यो ।।१०३।।

(वह विश्वामित्र,शेषके पास गया। और शेषको विश्वामित्रने,न्याय करने के लिए कहाँ। और पीछे घटी हुयी,सभी हकीकत बताया।)तब शेषने कहाँ,कि,(मै न्याय करूँगा,परन्तु मेरे सिर पर,पचास कोटी योजन,पृथ्वीका बोझ है। जिस योगसे,मुझसे न्याय करते नही आता

है।यदी तुम कुछ देर तक,पृथ्वीका बोझ सम्हालोगे,(तो मै न्याय करता हूँ। तब विश्वामित्र) ,तप के बलके घमण्ड़मे था,उसने कहाँ,कि,मै तुम्हारे उपरका बोझ,सम्हालता हूँ ।(ऐसा कहकर,पृथ्वी सिरके उपर लिया। तब उस)पृथ्वीके बोझसे,विश्वामित्र दबकर धूजने (काँपने)लगा। तब विश्वामित्रने,शेषसे कहाँ,कि,मै दबा जा रहा हूँ। तब शेषने उससे कहाँ,कि,तुम्हारे पास कुछ बल होगा,तो उसका आधार लगाओ। विश्वामित्र ने कहाँ,कि, मैने साठ हजार वर्ष तपश्या की थी। उसमेसे आधा तो,गुरूको अर्पण कर दिया,बाकी तीस हजार वर्ष रह गयी,उसके योगसे, पृथ्वी थंब(रूक)जाय । वह उसका बोझ,कुछ भी हल्का नही हुआ। तब शेष ने कहाँ,कि, तुम्हारे पास और भी कुछ है क्या?विश्वामित्र ने कहाँ,कि,तीस हजार वर्ष की तपश्या और थी, परन्तु उसे मैने(गुरूच्या खाईवर घातली आहे),गुरूके गड्डे मे ड़ाल दी है। तब शेषने कहाँ, कि,उसे वापस लेकर,उसका भी टेक लगा। तब विश्वामित्रने,वह गुरूको अर्पण की हुयी तपश्या,वापस लेकर,उसका भी आधार दिया। तो भी पृथ्वीका बोझ,कुछ कम नही हुआ। विश्वामित्र शेषसे कहने लगा,कि,मै तो दबकर मर जाऊँगा,फिर न्याय किसका करोगे?शेष बोला और भी,कुछ तुम्हारे पास हो,तो दो । विश्वामित्रने कहाँ,की,अब और तो कुछ,मेरे पास रहा नही,सिर्फ एक पल की सतसंगत,जो वशिष्ठने,मुझे दी थी,वही है,परन्तु उससे क्या होगा ?तब शेषने कहाँ,उसे भी दो । तब विश्वामित्रने कहाँ,कि,जो गुरूने मुझे,एक पलकी सतसंगत का फल दिया था । वह भी मैने दिया । ऐसा कहते ही,पृथ्वी अधर हो गयी। बोझ कुछ भी रह नही गया । विश्वामित्रने,दम लेकर कहाँ,कि,अब मेरा न्याय करो। शेषने कहाँ,कि,किसका न्याय? विश्वामित्रने कहाँ,कि,गुरूने मुझसे ठगाई किया,उसका। शेषने कहाँ,कि,अरे मुर्ख,तेरे साठ हजार वर्षोकी तपश्यासे,तेरा बोझ कुछ भी कम नही हुआ। गुरूकी एक पलकी सतसंगत के फलसे,पृथ्वी अधर हो गयी । तो भी तुम्हे,नही सूझता है,कि,ज्यादा कौनसा है। और अधिक,न्याय करनेके लिए,कहता है। विश्वामित्र ने,गुरूका शब्द,सत्य करके,गुरू को पूजा । ।।१०३।।

उपजी प्रीत डिंभ निवाऱ्यो ।। साध संगत मिल कारज साऱ्यो ।।
गृह मे हुतो जनक बदेही ।। सुखदेव जोगी प्रम सनेही ।।१०४।।

विश्वामित्रके मनमे,गुरूसे प्रिती उत्पन्न हुयी । अपने अन्दरके दंभ(गर्व)का निवारण हुआ । विश्वामित्रने भी,साधूकी संगती करके,अपना कार्य किया । सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,इन दोनों मे(विश्वामित्र तो वनका योगी था और वशिष्ठ मुनी गृहस्थी,जिसे औरत-बच्चे थे।)इन दोनोमे अधिक कौन?और जनक विदेही हुआ,गृहस्थी था ।(उसका राज्य और राणीयाँ बहुत सी थी ।)सुकदेव योगी,इसी योगका परमस्नेही था । ।। १०४ ।।

त्यागी तपी सदा बन वासी ।। जलमत गृहे युँ भयो उदासी ।।
अटक्यो बिवाण ब्यास के आयो ।। ब्यास देव गुर जनक बतायो ।।१०५।।

यह सुकदेव यती था।(यह जन्म लेते ही,अपना नाड़,अपने हाथोमे लेकर,वनमे चला गया था। बाकीके सभी तो,जन्म लेनेके,होशियार होनेपर,भक्ती करने लगते है। परन्तु यह सुकदेव, माँके गर्भमे ही,भक्ती करने लगा था। ऐसा वह सुकदेव)योगी,तपश्वी,सदा वनोंमे रहने वाला और जन्म लेते ही,(एक पल भी)घर मे नही रहकर,उदास होकर,(अपना नार,अपने हाथोंमे लेकर,वनमे चला गया था। उसने(सुकदेवने),बहुतसे लोगों को,विमानमे बैठाकर,वैकुण्ठ मे भेज दिया। एक बार,उस सुकदेव ने,ऐसी इच्छा की,कि,मै भी वैकुण्ठ मे जाऊँ,ऐसा विचार करके,विमानमे बैठकर,वैकुण्ठमे जाने लगा। तब वैकुण्ठके दरवाजे पर,द्वारपालोंने पूछा,की,तुम्हारा गुरू कौन है?तब सुकदेव ने,अभिमान(घमण्ड)से कहा, कि,मुझे भेजने वाला,कौन हो सकता है?और मै गुरू,किसको बनाऊँ?क्यों कि,संसार मे,मेरी अपेक्षा अधिक,मुझे कोई भी दिखाई नही देता है। फिर मै गुरू,किसलिए करूँ?तब वैकुण्ठ के द्वारपालोंने कहा,कि,यहाँ जिसका गुरू नही है,उसे अन्दर जाना मना है । भेजने वाले गुरू का नाम,हमारी सुची मे रहे बिना,दूसरोंके भेजे हुए जीवोंको,हम अन्दर नही जाने देते। आप लौट कर जाकर,गुरू करके आओ,तब आप अन्दर जा सकोगे । ऐसे सुकदेवका विमान रोक दिया गया। तब सुकदेव वापस आकर,अपने पिता,वेदव्याससे पूछने लगा ।(अब मै,किसे गुरू करूँ?मेरे जैसा त्यागी तो,संसारमे दिखाई नही देता। तब व्यासने देखा,कि,इसे त्यागी पन का,बहुत अभिमान हो गया है। इसलिए इसका अभिमान दूर हो,ऐसा संसारी गुरू,इसको करा देना चाहिए। ऐसा विचार करके देखा,तो उस समय,गृहस्थीयों मे जनक राजा,सभी की अपेक्षा अधिक,व्यासको दिखाई दिया,इसलिए उन्होने)व्यासने,जनक राजाको,गुरू करनेके लिए,सुकदेवसे कहाँ ।१०५।

सुख देव जती जनक गुर राया ।। भक्त भेद ले मोख सिधाया ।।
गृह त्याग की क्हा इधकाई ।। नारद के गुर झिंबर भाई ।।१०६।।

आगे सुखदेवने,जनक राजाको गुरू करके,उनके पाससे भक्तीका भेद लेकर,मोक्षमे गये। (वह सुखदेव,जनक राजाको,गुरू बनाने के लिए गया। वहाँ की हकीकत,बहुत लम्बी चौड़ी है। परन्तु उसे यहाँ देनेका,कोई कारण नही है।)मतलब इतना ही,कि,जनक राजा तो गृहस्थी था और सुखदेव त्यागी व तपश्वी था । सुकदेवने,जनक राजाको गुरू किया। तो वह जनक गृहस्थी था,तो सुखदेव की अपेक्षा,अधिक होना ही चाहिए,ऐसा राजासे, महाराजने कहाँ। गृहस्थीका और त्यागीका,क्या अधिकाई रही। इसी तरह,नारद ऋषीको, गुरू कालू भोई(मल्लाह)था।(उस नारदको,ऐसा ही हुआ),(नारद,वैकुण्ठमे,विष्णू की सभा मे,हमेशा जाते रहता था। परन्तु उस नारदके,सभासे उठकर जानेके बाद,उस जगहको (जहाँ नारद बैठता था),विष्णू लीप-पोत कर,साफ कराते थे। यह बात तो,नारद को मालुम नही थी। परन्तु दूसरे सभासदोंको मालुम थी। एक दिन नारदके,किसीसे बाते करते समय,उसने(ठोसा)(बातों की ठेस)दी,कि,तुम क्या बड़ी-बड़ी बाते करते हो?तुम जिस

जगह पर बैठ जाते हो,वह जगह अपवित्र हो जाती है। ऐसा तुम अशुद्ध हो। तब नारदने,उसे पूछा,कि,यह तुम,कहाँ की बात कर रहे हो?मै तो त्रिलोकी मे घूमते रहता हूँ । और विष्णू भगवानके मनकी,सारी बातें जानता हूँ और स्वयं मै,विष्णूसे बात करता हूँ । तब उसने नारदसे कहा,कि,तुम विष्णूकी सभामें बैठते हो और उठकर जाते हो,तब तुम्हारे उठकर चले जानेपर,तुम्हारी बैठी हुयी जगह, विष्णू भगवान साफ कराकर,शुद्ध कराते है । तब नारद वैकुण्ठ मे गया व सभा मे से उठकर, बाहर आनेपर,वास्तविकता क्या है,यह देखनेके लिए,थोड़ी देर खड़ा रहा। नारदके उठकर बाहर जानेपर,विष्णू ने कहाँ,कि,नारद बैठे हुअे थे,वह जगह साफ करके,शुद्ध कर दो। तब वहाँ के दूत,वह जगह साफ करने लगे । उसी समय,नारदने आकर विष्णूसे पूछा,कि,मैने ऐसा क्या अपराध किया है,कि,मै बैठा उस जगहको आप साफ कर-कर,शुद्ध कर रहे हो?मैने ऐसा कौन सा गुनाह किया है,वह बताओ?तब विष्णू ने कहा,कि,नारद,तुम नुगरा हो। तुम्हे गुरू नही है। इसलिए,नुगरे मनुष्यके किए हुए,सभी कर्म व्यर्थ जाते है । और तुम जहाँ पैर रखते हो,वह जगह अपवित्र हो जाती है। तब नारद बोला,कि,महाराज,मै किसे गुरू करूँ?मेरी अपेक्षा अधिक संसारमे कौन है?मै तुम्हारा मन हूँ व तुमसे आकर हमेशा मिलता हूँ और वैकुण्ठमे आना,अन्य लोगों के लिए,महा मुश्किल है,उस वैकुण्ठमे,मै आता-जाता हूँ । अब मेरी अपेक्षा,अधिक कौन है?तब अब किसको गुरू करूँ?वह आप ही बताईये,तब विष्णू बोला, कि,तुम अवंतिका पुरीमे जाओ। और तुम्हे सर्वप्रथम,सामने जो मनुष्य मिलेगा,उसे ही गुरू बना लो । तब नारद आकर,बड़ी सुबह मे निकला और मनमे कहने लगा,कि,जो सामने मिलेगा, उसे गुरू बना लूँगा। ऐसा सोचते हुए,जा रहा था,कि,सामने कालू नामका मल्लाह,कंधे पर मछली पकड़नेका जाल और हाथों मे मछली रखनेकी टोकरी लेकर निकला । तब नारद चिन्ता मे पड़ा,कि,इसे गुरू कैसे करूँ?यह तो मछली मारनेवाला मल्लाह है। फिर नारद ने,उसे गुरू नही बनाया। और वैकुण्ठ मे गया । तब विष्णूने पूछा,क्यो नारद,गुरू बनाये ? नारद ने कहा,नही महाराज। तब विष्णूने कहा,कि,कल जरूर बनाकर,आना । नारद ठीक है,ऐसा कहकर निकला। दूसरे दिन नारद,दूसरे दरवाजे से गया,तो भी,वही कालू मल्लाह उसे मिला। तब नारदने,मन मे कहा,कि,आज भी,यह सामने मिला। इसे कैसे गुरू करूँ?और कोई दूसरा सामने मिले,तो उसे गुरू बनाता। परन्तु विष्णूने कहा है,कि, सर्वप्रथम जो मिले,उसीको ही गुरू करना। फिर कोई दूसरा सामने मिले या न मिले,एक जैसा ही। यदी दूसरा सामने मिला भी,तो उसे गुरू किया नही जाता। ऐसा विचार करके,नारद लौटकर वैकुण्ठ मे आया। तब फिर विष्णू ने पूछा,कि,आज गुरू किए या नही । तब नारद बोला,कि,नही महाराज। तब विष्णू बोले,कि,कल यदी गुरू नही किया,तो गुरू किए बिना,वैकुण्ठ मे मत आना। नारद मन मे कहने लगा,कि,देखो,गुरू करने चला,तो वैकुण्ठ मे आना भी मना हो गया। और विष्णू का दर्शन भी होता था,वह भी बन्द हो गया

। लेकिन,अब तो गुरू करना ही पड़ेगा। जिससे वैकुण्ठ मे आना होगा। ऐसा कहकर, वह,वहाँ से चला। और तीसरे दरवाजे से,गाँव मे जाने लगा,तो भी सर्वप्रथम,वही कालू भोई,उसी थाटमे मिला,तब नारदने कहा,कि,अब तो इसे,गुरू करना ही पड़ेगा,ऐसा विचार कर,उसे गुरू किया और वैकुण्ठ मे गया। तब विष्णू ने,प्रत्येक सभासदोंसे पूछा,कि,तुमने गुरू किया या नही। और तुम्हारा गुरू कौन है?ऐसा सभी सभासदोंसे,अलग-अलग पूछा । तब जिससे-जिससे पूछा,उसने-उसने,गुरू किया है और गुरू का नाम भी सभी ने,बड़े गौरव के साथ बताया। जब नारद की बारी आयी। तब उससे पूछा,की,गुरू किया है क्या ?नारद बोला,कि,हाँ गुरू किया है। विष्णू ने पूछा,कि,किसे गुरू किए?तब नारद,गुरू तो किया है,परन्तु-लेकिन,ऐसा बोलकर,गुरू का नाम बताने में,शर्म से अटक गया। तब विष्णू बोला,कि,तुम गुरू का नाम कहने मे शर्माया,तो इस गुनाहके लिए,तुम्हे चौरासी लाख योनियोंमे,जाना पड़ेगा। तुम गुरूका नाम बतानेमे शर्माया,तो इसकी यह सजा है। यह वाक्य सुनकर,नारद बहुत डर गया। और मनमे कहाँ,कि,देखो,गुरू करने से यह लाभ हुआ,कि,लक्ष चौरासीमे जाना पड़ेगा। इसकी अपेक्षा,यदी गुरू नही किया होता,तो ठीक होता। यदी गुरू नही किया होता,तो सिर्फ वैकुण्ठमे ही,आनेकी मनाही रहती । बाकी तो कही भी जाने की,मनाही नही ही थी और चौरासीमे भी,नही जाना पड़ता । परन्तु यह तो मै,गुरू करके,उल्टा काम किया। फिर विष्णूसे,नारद बोला,अब मै क्या उपाय करूँ?विष्णू बोला,कि,हमसे क्यों पूछते हो?इसकी उपाय,अपने गुरू से पूछो?तब नारद,मन मे कहा,कि,इस गुरू से क्या पुछूँ?वह तो मछलियाँ मारकर,हत्या करनेवाला मल्लाह है। वह इस लक्ष चौरासीमे,नही जानेका उपाय,क्या बतायेगा?ठीक है,विष्णूने कहाँ ही है,तो उस गुरूसे ही,जाकर पूछा जाय। फिर नारद,कालू(नारदका गुरू)मल्लाहके पास आकर बोला, कि,मुझे लक्ष चौरासी योनियोंमे,जानेका दंड़ हुआ है। इसका उपाय,आप बताओ?तब कालू मल्लाह(नारदका गुरू)बोला,तुम विष्णूसे कहो,कि,लक्ष चौरासी योनीका एक पट्टा, मुझे लिख दो। जिससे उसीके प्रमाणसे,मै भोगते रहूँगा। फिर विष्णू,जब तुम्हे लक्ष चौरासी योनीके नाम लिखकर देगा,तब वह कागज, विष्णूके सामनेही बिछाकर,उस कागजपर,इधर से-उधरसे,खूब लोटो। और जब विष्णू,तुमसे पूछे,की,यह तुम क्या कर रहे हो?तब तुम कहना,कि,मैं तुम्हारी रचना की हुयी,लक्ष चौरासी योनी,भोग रहा हूँ। कभी इस योनीमें आता हूँ,तो कभी उस योनीमें जाता हूँ। इस तरहसे,सभी योनी भोग रहा हूँ,ऐसा कहो,कि, यह तुम्हारी ही हुयी लक्ष योनी है,वह मैं भोग रहा हूँ। फिर नारद,विष्णूके पास आकर कहा,कि,मुझे चौरासी लाख योनियोंकी,सूची लिखकर दो। यानी मैं उसीके प्रमाणसे,भोगते रहूँगा। कालू मल्लाह(नारदके गुरू)के बताए नुसार,नारदने सब किया। तब विष्णूने पूछा, की,नारद,यह तुम क्या कर रहे हो?नारद बोला,कि,महाराज,मैं तुम्हारी रचना की हुयी,लक्ष चौरासी योनी भोग रहा हूँ। तब विष्णू बोला,कि,तुम तो गुरूको हल्का(नीच)

जानता था। परन्तु देखो,गुरूने तुम्हारी लक्ष चौरासी योनी भोगना,बातो-बातोमे गवाँ दिया ।)सतगुरू सुखरामजी महाराज,राजासे कहते है,कि,इसमें गृहस्थीका और त्यागीका,क्या अधिकाई रह गयी ? ।। १०६ ।।

राजा अमरिष रिख दुर्वासा ।। वो बनवासी वो गृह उदासा ।।
दियो सराप सुदरसण बायो ।। उलटर चक्र उसीके आयो ।।१०७।।

सतगुरू सुखरामजी महाराजने राजासे कहा,अमरीष राजा तो राजा था। और दुर्वासा यह ऋषी था ।(इसकी बात साधसिद्धके पारखके अंग आयी है। उसे देखो।)कि दुर्वासा ने अमरीषपर सुदर्शन चक्र चलाया और वह उलटकर चक्र दुर्वासाको ही मारने दौड़ा ।।१०७।।

पुरी पुरी हर पास पुकारे ।। जन को द्रोही कोण ऊबारे ।।
जावो रिष राय के पासा ।। बगसे चूक मिटे भव तरासा ।।१०८।।
में जन में जन मेरे माही ।। भगवत भक्ता अंतर कोउ नाही ।।
जब वो रिष राजा के आयो ।। मेटी त्रास गुन्हो बग सायो ।।१०९।।
सिंवरे राम जके बड भागी ।। क्या गृही अर क्या बेरागी ।।
ब्होरूं अेक जाँजळी रिष नामा ।। तुळा धार बाण्यो गृह धामा ।।११०।।

जो राम नामका सुमिरन करता है,उसको ही भाग्यवान समझना चाहिये । क्या तो गृहस्थी और क्या वैरागी,(चाहे गृहस्थी हो या वैरागी हो,राम नामका सुमिरन करनेवाला ही, भाग्यवान है।)एक नरोत्तम नामका,जांजली ऋषी था और तुलाधारा नामका,बनिया गृहस्थी था । ।।११०।।

बन मे जोग लगाई ताळी ।। मन पवना थिर किया कपाळी ।।
खुल्यो ध्यान ग्रभ मन आण्यो ।। सुर नर पंखी सरावे बाण्यो ।।१११।।

उस जांजुली ऋषीने,वनमे योगाभ्याससे,ब्रम्हाण्डमे ताली लगा दी । मन और स्वाँस कपाल में स्थिर कर दिया।(उसकी जटामें,चिडीयाँने घोंसला बनाया था)और जब ध्यान खोला,तो (उसकी जटासे,भर्रसे चिडीयाँ उड़ी),तब जांजली ऋषीको,बहुत गर्व हुआ,(कि,मेरे जैसा आसन साधनेवाला,कोई भी नही,कि,मेरी जटा मे,चिडीयाँ ने घोसला बना दिया। ऐसा मन मे गर्व लाकर देखता है,तो)उपर आकाश मे देवता कह रहे है,कि,आज संसार मे तुलाधार बनिया धन्य है। और जमीन पर मनुष्य,इधर-उधर घूमते हुए,कह रहे है,कि, आज संसार में तुलाधार बनिया धन्य है और वृक्षों पर पंछी बोल रहे थे,कि,आज संसार मे तुलाधार धन्य है।(इस तरह जांजली ऋषी सुनकर,उनसे पूछने लगा,कि,यह तुलाधार कौन है?और कौन से पहाड़ मे है?और किस जगह तपश्या कर रहा है?ऐसा पूछा?तब लोगोने और देवताओं ने कहाँ,कि,तुलाधार जाती का बनिया है और काशी मे इसका घर है। काशी मे दूसरे बनिया लोग,दूसरे लोगों के पास से,माल तौलकर लेने मे,अधिक तौल लेते है ।

और दूसरों को माल तौलकर देनेमे,कम देते है),इसलिए कोई ठगा नही जाये,उसके लिए,तुलाधारने काटा(तराजू)बनाया है।वह सभी को देनेवालेका,लेनेवालेको,माल तौलकर देता है। और उसके तौलकर दिए गये माप पर,सभी लोग विश्वास करते है । और वह तुलाधार,तौलकर देने के कामके कारण,समय नही मिलनेसे,दिन भर भोजन नही करता है ।और स्नान आदी करके,देहका भी कर्म नही करता है और देवपूजा भी,फुरसत नही होनेसे,नही करता है। रात हो जाने पर,सभी लोग सोते है,तब इसका तराजू बंद होता है। उसी समय खाना-पीना करता है । और थोड़ासा सोकर और भी उठकर,तौलनेमे लग जाता है। इस तरहसे,मुफ्त मे लोगोंको तौलकर देता है। इसमे(लोगोंको तौलकर देनेमें), तुलाधारका मतलब यही है,कि,किसी का कोई अधिक मत लो और बाकी किसीको,कम मत दो । इसके लिए ही,यह धंधा स्वीकार किया है । ।।१११।।

जब तपसी कासी चल आयो ।। तुळाधार घर बेठो पायो ।।
जप तप जोग तज्या अभिमाना ।। तुळाधार को चीन्यो ग्याना ।।११२।।

तब वही तपस्वी(जांजली ऋषी),काशीमे चलकर आया।(और तुलाधारके घर आया), तुलाधार घरमे ही बैठा मिला। वह लोगोंको माल तौलकर देनेका,काम कर रहा था।(तब उसे देखकर)जांजली ऋषीने जप करनेका,तपश्या करनेका और योगाभ्यास छोड़कर, अभिमान त्याग कर,तुलाधारका ज्ञान पहचान लिया । ।। ११२ ।।

गुर प्रताप भक्त घट जागी ।। ब्रम्ह समाद ब्रेहमंड लागी ।।
ब्होर सुणो अेक कुर्कट राया ।। रिष पुंडलीक ज्हाँ चल आया ।।११३।।

(उस जांजली ऋषीने,तुलाधारको गुरू किया)और गुरूके प्रतापसे,घटमे भक्ती जागृत हुयी ।व जांजली ऋषीकी ब्रम्हांण्डमे,ब्रम्ह समाधी लग गयी और भी सतगुरू सुखरामजी महाराजने, राजासे कहा,कि,यह तुलाधार तो गृहस्थी था और जांजली ऋषी तपस्वी था । इनमे तुलाधार ही अधिक हुआ और भी एक कुर्कुट राजा था। और पुंड़लिक तीर्थ करते-करते),उसके घर चल कर आया। ।। ११३ ।।

अड़सठ तीरथ सबही कीना ।। कुर्कट के घर बासा लीना ।।
जब बूजे तिर्थ को बासी ।। याँ सूं कोस किता गंग कासी ।।११४।।

यह पुंड़लिक अड़सठ तीर्थ करके आया और कुर्कट राजाके घर,निवास किया । भोरमें ब्रम्ह मुर्हुत मे,चलने लगा,तो पूछा,कि,यहाँ से काशी व गंगा कितने कोस दूरी पर है ? ।।११४ ।।

कोस पांच पर निकट बताई ।। देखी नही सुणी रिषराई ।।
उपजी गिलानगवाँ चल आई ।। देखत देव कन्या होय जाई ।।११५।।

तब कुर्कट राजा बोला,कि,यहाँसे पाँच कोस है । ऐसा कहते है,मैने तो देखा नही है,परन्तु सुना है,कि,पासमे ही है । ऐसा सुनकर,पुंड़लिकको ग्लानी उत्पन्न हुयी,कि,(यह बूढ़ा हो

गया है। और पासमे गंगा-काशी रहते हुए भी,कभी स्नान करने नही गया है । ऐसे दुष्टके घरका,मैने अन्न खाया है । इसका प्रायश्चित क्या किया जाय,ऐसा विचार कर ही रहा था,कि,इतनेमें) तीन गायें आयी,वे देखनेमे बहुत कुरूप थी । वहाँ उस कुर्कट राजाके घर आने पर,गायसे देवकन्या बन गयी ।।। ११५।।

रंभा अेक स्नान करावे ।। कळस भरे अेक भवन बुरावे ।।
हे राजा,ये क्हा अँचंभा ।। पश्वा जूण भई कुण रंभा ।।११६।।

एक रंभा जैसी देवकन्या,कुर्कटको स्नान कराने लगी और एक पीनेके लिए पानी भरने लगी और एक भवन बुहारने लगी। तब पुंडलिकने,कुर्कटसे पूछा,कि,हे राजा,यह क्या अचंभा है? ये तीनो आयीं,तब पशु योनीमे कुरूप गायें थी। उससे ये रंभा जैसी कैसे हो गयी?।११६।

कुर्कट कहे इसीकुंई बूजो ।। तम हम नही और कोई दूजो ।।
जब ही रिख बूजे प्रसंगा ।। म्हे कासी गोदावरी गंगा ।।११७।।

कुर्कट बोला,कि,तुम उन्हीसे पूछ लो । यहाँ तुम्ही और हम है,दूसरा कोई नही है । पुंडलीक उनसे पूछने लगा,कि,तुम लोग कौन हो?यहाँ गाये बनकर आयी और देवकन्या कैसे बन गयी? उनमेसे एकने कहाँ,मै काशी हूँ,दूसरीने कहाँ,मै गोदावरी हूँ और तीसरीने कहाँ,मै गंगा हूँ । ।।११७।।

दुनिया पाप करे मोही राळे ।। पश्वा जूण बर्ण भई काळे ।।
अे हरीजन प्रमेसर पूरा ।। द्रसण कियाँ पाप व्हे दूरा ।।११८।।

(तब इस पुंडलीकने पूछा,तुम लोग ऐसी कुरूप गायें,कैसे बन गयी,तब उन्होने कहाँ,कि,) संसारके लोग पाप करते है और वह पाप(लोगोंके छोडे हुए)हमारे अन्दर आनेसे,हम पशु योनीमे,काले रंग की गाये हो जाती है । यह कुर्कट राजा,पूरा हरीजन(माँ-बाप की सेवा करनेवाला),पूरा परमेश्वर ही है । हम यहाँ आकर,इनका दर्शन करनेसे,लोग जो पाप लाकर ,हम में छोडते है,वह हमारे पाप,इनके दर्शनसे दूर हो जाते है । ।। ११८ ।।

युँ सुण रिख आश्रम चल आयो ।। भक्त करी घर में हर ध्यायो ।।
ब्होर कहुँ अेक हरी को दासा ।। बणारसी बसे रैदासा ।।११९।।

ऐसा सुनकर पुंडलिक,अपने घर पंढरपुर चला आया। घर मे ही भक्ती(माँ-बाप की सेवा) करने लगा। और हरी नामकी भक्ती करने लगा ।(माँ-बाप की सेवा करनेके योगसे, उसका दर्शन करनेके लिए,स्वयं भगवान)वहाँ आये ।(यह पुंडलीक माँ-बाप की सेवा करनेमे,लीन होनेके कारण,उसे खडे रहने के लिए,एक ईट दी । और कहाँ,कि,मै तो इस समय,माँ-बाप की सेवा करनेमे,उलझा हुआ हूँ । मै जब तक,माँ-बाप की सेवा करता हूँ । तब तक तुम,इस ईट पर खडे रहो । तब वह ईटपर खडा रहा,इसलिए लोग उसे,विठोबा कहते है।)सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,देखो । जब पुंडलिक तीर्थवासी

था,उस समय कुर्कट राजा था। तो उस तीर्थवाले मे और राजामे,तुम्हे अधिक कौन दिखाई देता। और बादमे पुंडलिक, घरमे आकर माँ–बापकी सेवा करने लगा,तो उसके दर्शनके लिए,स्वयं भगवान आये। ऐसा जो पुंडलिक,वह क्या करके बड़ा हुआ?इसका विचार करके,तुम भी सभी जन,जैसा पुंडलीकने किया,वैसे ही तुम भी करने लगो। जिससे,तुम्हारे भी दर्शन को,भगवान आयेंगे। एक हरी का दास,रैदास,जाती का चमार, काशी मे रहता था । ।। ११९ ।।

पुत्री प्रणी नूत बुलाई ।। देहे धार गंगा घर आई ।।
साची भक्त सदा हरी संगा ।। कठोती माँय प्रगटी गंगा ।।१२०।।

उसकी(रैदास की)लड़की की शादी हुयी,तब रैदासने,गंगा को आमन्त्रण देकर बुलाया । तब गंगा देह धारण करके,रैदासके घर आयी । यह रैदास भी तो,गृहस्थी ही था,जिसने भी सच्ची भक्ती किया। तो हमेशा हरी उसके संग ही रहेंगे ।(एक समय,एक ब्राम्हणको,गंगा स्नानके लिए जाते हुए,रैदासने एक टक्का देकर,कहाँ,कि,यह मेरे यहाँ से,चोलीके लिए,गंगा को दे देना। परन्तु,गंगा हाथ निकालकर,अपने हाथोंमे लेगी,तो ही देना। नही तो,लौटा कर लाना। उस ब्राम्हणने,गंगामे जाकर स्नान किया। उसे रैदासके दिए हुए,टक्के की(रूपये की)याद आयी। वह उसे हाथमे लेकर,गंगासे कहाँ,कि,यह टक्का रैदासने,तुम्हे चोलीके लिए दिया है। और तुम हाथोमे लेती हो,तो देता हूँ। तब गंगाने,अन्दरसे हाथ निकाल कर लिया और सोने का एक अमुल्य कंगन,रैदास को भेंट देनेके लिए,ब्राम्हण को दिया। वह कंगन,ब्राम्हण लेकर, मनमे कहाँ,कि,गंगा रैदासको कहने थोड़े जायेगी। यह कंगन,मै रैदास को किस लिए दूँ?अब ऐसा विचार करके,उस ब्राम्हण ने कंगन,रैदास को न देकर,अपने पास रख लिया। बाद में कुछ दिनों के बाद,उस ब्राम्हण को पैसों की गरज पड़ी,तब उसने वह कंगन,एक साहुकारके घर,बन्धन रखकर,रूपये ले लिए। उस सावकारने,बन्धक रखा हुआ कंगन,अच्छा समझकर,अपनी पत्नी को पहनने को दिया,वह कंगन पहनकर,त्यौहार के दिन,काशी के राजा की राणी से,मिलने के लिए गयी । तब राणी ने,उसके(साहुकारके पत्नीके),हाथोंका कंगन देखकर,मन में कहाँ,कि,मैं राजाकी राणी होते हुए भी,मेरे पास ऐसा कंगन नही है और इस साहुकारकी स्त्रीके पास,ऐसा कंगन है। इसलिए वह राणी,राजासे रूठकर बैठ गयी। राजाने,राणी रूठकर बैठी है,ऐसा सुनकर,उससे पूछनेके लिए गया और क्यों रूठ गयी हो,ऐसा पूछा?तब वह बोली,कि, साहुकार की स्त्री के पास,जैसा कंगन है,वैसा अपने यहाँ भी नही है,तो वह कंगन मुझे मँगा दो । तब राजा बोला,कि,यह कौन सी बड़ी बात है । वह साहुकार,अपनी प्रजा है । वह जितने पैसे मांगेगा,उतने पैसे देकर,वह कंगन ला देता हूँ। फिर राजाने,उस साहुकार को संदेश भेजा,कि,तुम्हारी औरत के हाथोंमें जो कंगन है,वह कंगन लेकर,राजाने तुम्हे बुलाया है। साहुकार यह सुनकर खुश हुआ। कि,अब राजा की और अपनी मित्रता होगी।

ऐसा विचार करके,कंगन लेकर,राजाके पास गया। और वह कंगन,राजाको दिया। राजा,वह कंगन देखकर खुश हुआ। और पूछा,सेठजी,यह कंगन तुमने कहाँ से मँगाया?और क्या किमत का है,वह बताओ?यानी खजाने से,तुम्हे रूपये दिए जाय। उस कंगन को तो,करोड़ो रूपये के नग लगे हुए थे। परन्तु सावकार,उसे हजारो रूपये का है,समझता था ।उसे उसकी परीक्षा(जाँच)नही थी और उसने सिर्फ सौ रूपयेमें,उस ब्राम्हणके पाससे, बन्धक रखा था। वह सावकार,झूठ बोलकर कहाँ,कि,यह कंगन परदेशसे मेरे(आडत्या) ने भेजा है। और उसकी किमत बोलकर,कुछ नही लूँगा। तब राजा,बहुत खुश हुआ और वह कंगन राणीके यहाँ भेजा। राणी हाथमें कंगन पहनकर,फिर रूठ गयी। ऐसा सुनकर राजा,राणीके पास गया। उसने कहाँ,कि,अब क्यों रूठ गयी?तब राणी ने कहाँ,कि,यह तो एक ही हाथमें कंगन हुआ। दूसरा हाथ कंगनके बिना,शोभा नही देता है। तब राजाने कहाँ,तुम रूठो मत,मैं उस सेठसे कहकर,दूसरा भी मँगा देता हूँ। राजा,उस कंगन की किमत जानता था,कि,इतने रूपये मेरे खजाने में भी नही है,फिर मैं,खरीदूँगा कहाँसे? उसने उस सेठको बुलाकर कहाँ,कि,सेठजी,राणी दूसरे कंगनके लिए रूठी है। तो इसलिए मेहरबानी करके,पहले जहाँ से कंगन मँगाये थे,वही से दूसरा भी मँगा दो । तब साहुकारने घबराकर कहाँ,कि,राजा साहब,मैं आपसे झूठ बोला, इसकी मुझी माफी दो। यह कंगन, काशीके फलाने ब्राम्हणने,सिर्फ सौ रूपयेके बदले,मेरे पास बन्धक रखा था। वह उससे (ब्राम्हण)से छुड़ाया गया नही। उसने मुझसे कहाँ,कि,यह बन्धक तोड़ दो और कंगन रख लो। फिर राजाने,उस ब्राम्हण को बुलाया। ब्राम्हण समझा,कि,कोई जप या अनुष्ठान करनेके लिए,राजाने बुलाया होगा। इसलिए राजा के पास,ठाट-बाट से, सभी साहित्य लेकर गया। ब्राम्हण के राजा के यहाँ जाते ही,राजा ने उससे(ब्राम्हण से),कंगन की बात पूछी। तब यह ब्राम्हण,एकदम घबरा गया। पापा-पापा,बाबा-बाबा,ताता-ताता,दादा-दादा,मामा-मामा ऐसे बोलने लगा। कभी पूजा का सामान नीचे गिरता,तो पूजाका सामान उठाता,तो पोथी नीचे गिरती,पोथी उठाता,तो धोती गिरती,धोती उठाता,तो आसन नीचे गिरता और उठाता है,तो हाथ की छड़ी नीचे गिरती है,इसतरह से,ब्राम्हणको उलझा हुआ देखकर,राजाने,ब्राम्हणसे कहाँ,कि,सत्य बात क्या है,वो बताओ?फिर ब्राम्हणने,सच्ची घटना बताकर बोला,कि,यह कंगन मुझे गंगाने,रैदासको देनेके लिए,दिया था। वह कंगन,मैं रैदासको न देकर,बीचमें अपने पास ही रख लिया। और रूपये का काम पड़ने पर,सेठजी के पास,सौ रूपयेमें बन्धक रखा। वह मुझसे छुड़ाया नही गया। इसलिए मैंने सेठजीसे कहाँ,कि,यह कंगन तुम,तुम्हारे रूपयेमें तोड़ लो । फिर राजाने कहा,कि,चलो रैदासका घर दिखाओ। फिर आगे-आगे ब्राम्हण,उसके पीछे सावकार और उसके पीछे राजा और राजाके लोग और उनके पीछे गाँवके बहुतसे लोग,इसतरहसे लोग,रैदास के घर आये । ब्राम्हणने,रैदास अंगुलीसे दिखा दिया। राजाने,रैदाससे कहाँ,कि,ऐसा कंगन,गंगाके पाससे,

हमे मँगा दो। तब रैदासने,गंगाके यहाँ न जाकर,वही उसके पास,एक कठौती(लकड़ीका बनाया हुआ,पानी रखने का बर्तन)थी,उसमें जूते सीलने के लिए,रैदास चमड़ा भिगोता था ।)उस कठौती में हाथ डालकर,वैसा ही कंगन, राजा को दिया । ।। १२० ।।

ध्रु प्रेहलाद ध्यान बन कीयो ।। हरजी राज हट कर दीयो ।।
घर मे नाम कबीरा भाई ।। सकळ भेष मे फिरे द्वाई ।।१२१।।

सतगुरू सुखरामजी महाराजने कहाँ,कि,यह रैदास गृहस्थी था । ध्रुवने वन में जाकर ध्यान किया,उसे हरजी ने हट्ट करके राज्य दिया ।(पहले ध्रुवने राज्य किया),फिर बाद में ध्रुव को,अटल पदको भेजा और कहाँ,कि,तुम राज्य करो,यदी वनमें अधिक गुण रहता,तो हरी अपने ध्रुव जैसे भक्तको,राज्य में क्यों फँसाते?और प्रल्हाद यह भी भक्त था,उसे भी वन में न भेजकर,उससे राज्य कराया। संत कबीर साहब और नामदेव ये भी गृहमें ही हुए। उनका भेषधारीयों में(साधू लोगोंमें),कुछ काम पड़ा,तो कबीर नामकी दुहाई(आण, शपथ) देते,तो सभी भेषधारी गृहस्थी की(कबीर,नामदेव की)शपथ मानते है । ।। १२१ ।।

ऊँच निच मे कारज को हे ।। सूत कथा सणका दिक मोहे ।।

इसमें ऊँच और नीच जाती का,कोई कारण नही है। सूतजी यह जाती का बढ़ई है। वह नैमिष्यारण्यमें,कथा कहते रहता है। उसकी कथा,सनकादिक ऋषी सुनकर मोहित होते है।

राजो वाच ।।

हो स्वामीजी ।। मोय भ्रम मिटायो ।। गृह त्याग समता कर गायो ।।१२२।।

राजा चंदूलालने कहाँ,कि,जो आपने मेरा भ्रम(ग्रहस्थी और त्यागी इसमें,त्यागी साधूको मैं, अधिक समझाता था।)वह मेरा भ्रम आपने मिटा दिया। आपने ग्रह और त्याग,समान करके दिखा दिया । ।।१२२।।

अब तुम काज हमारो कीजे ।। सत्तगुर होय कर दिक्षा दीजे ।।
कर प्रणाम चर्ण गहे लीया ।। सत्तगुर हाथ सीस पर दीया ।।१२३।।

अब मेरे भी जीवका आप कल्याण करो,आप मेरे गुरू होकर,मुझे भी दिक्षा दो। ऐसा कहकर,राजाने प्रणाम करके,सतगुरू सुखरामजी महाराजके चरण,पकड़ लिया। तब महाराजजी ने, अपना हाथ उसके(चन्दूलाल राजाके),सिर पर रखा । ।।१२३ ।।

दिक्षा लिवी राम लिव लागी ।। भक्त पुरातम हिर्दे जागी ।।
बागा तूर सूर घट ऊगा ।। लागो ध्यान प्रम पद पूगा ।।१२४।।

राजाके दिक्षा लेते ही,राम नामकी लीव लग गयी । यह राजा,पूर्व जन्मका भक्त था । वह भक्ती,इसके हृदयमें जागी और अनन्त सुर्योका प्रकाश हो गया । तुर(एक प्रकारका वाद्य) बजने लगी । और राजाका ध्यान लगकर,परम पद में पहुँच गया । ।। १२४ ।।

क्रणी हीण सिष जो होई ।। आप समान करे गुरू सोई ।।
अब तम कहो करूं गुर देवा ।। तन मन लियाँ करूं म्हे सेवा ।।१२५।।

शिष्य,यदी करणीका हीन रहा,तो भी गुरू उसे,अपने जैसा कर लेते है। राजाने कहाँ,कि,अब आप जैसा कहोगे,वैसा ही करूँगा। तन,मन लगाकर,आपके चरणोंकी सेवा करूँगा।(सतगुरू सुखरामजी महाराजको,राजा,कुछ गावोंकी जहाँगिरी देता हूँ। ऐसा बोला, परन्तु सुखरामजी महाराजने,इन्कार कर दिया ।) ।। १२५ ।।

दोहा ।।

साचा सत्तगुर सिष कूं ।। करले आप समान ।।
दूजा गुर सुखराम के ।। कन फूँका रा ग्यान ।।१२६।।

सच्चे सतगुरू शिष्यको,अपने जैसा ही कर लेते है । दूसरे गुरू,शिष्यके कान फूँककर(एक रूपया लेते है,तो उनके एक रूपयेका) ज्ञान है । ।। १२६ ।।

।। इति राजा को संवाद संपूरण ।।